मंजु

श्री गोपाल आचार्य

सूर्य प्रकाशन मन्दिर
बीकानेर

प्रकाशकीय

सुय प्रकाशन मन्दिर की प्रकाशन-श्रृंखला में श्री श्रीगोपाल आचार्य के प्रथम उपन्यास मंजु का दूसरा संशोधित सम्करण प्रस्तुत करते हुए हम अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

मंजु राजस्थान का सर्व प्रथम हिन्दी उपन्यास है इसलिए इसकी महत्ता और भी अधिक हो जाती है।

इसके प्रकाशन के अवसर पर हम उन सभी इष्ट मित्रों और सहयोगियों के आभारी हैं जिन्होंने इस अवसर पर सहयोग दिया।

प्रकाशन सम्बन्धी सुझाव अभिनन्दनीय है।

राजेन्द्र बिस्सा
व्यवस्थापक

सूय प्रकाशन मदिर की अय उपलब्धिया

१ निवसना	(उपयास)	श्री गोपाल आचाय
२ नानी भीत लाल परछाइया	(उपयास)	राजानन्द
३ उस दिन	(उपयास)	शुभू पटवा
४ सावन आंखो मे	(उपयास)	यादवेन्द्र शर्मा चद्र
५ य कथा रूप	(कहानी सग्रह)	स यादवेन्द्र शर्मा चद्र
६ प्यास की प्यास	(कहानी सग्रह)	सुमर सिंह दया
७ हसिनी याद की	(मुक्तक सग्रह)	हरीश भादानी

अपनी ओर से

मजु स मरे लखन का प्रारम्भ था। इसमे घटना विकास के साथ साथ पात्रो म एक मनोवैज्ञानिक गुत्थी का सहज दिग्दर्शन है। वासना प्रेम त्याग सदाचार और आदर्श सब घटनाक्रम म अपने अपने स्थान पर पात्रो के जीवन म प्रतिबिम्बित ह। उनके विषय म अलग रूप म कम स कम कहा गया है और उनक सवादो म ही पाठक उनका व्यक्तित्व जान सकते है। सवादो क माध्यम स किस हद तक चरित्र चित्रण म मुझ सफलता मिली है इसकी कसौटी तो केवल पाठक ही है।

गजनर रोड
बीकानेर

—श्री गोपाल आचार्य

लेखक की अन्य रचनाएं

१ नित्रमना (उपन्यास)

२ विपथगामी (उपन्यास)

छाया पुरुष (उपन्यास)

४ शपथ (कहानी-संग्रह)

दो शब्द

- प्राक्कथन (handwritten)

नारी, पुरुष के लिए एक चिरंतन रहस्य है एसा रहस्य जो सदा और रहस्यमय होता जा रहा है। आधुनिक मनोविज्ञान के 'लिबिडो' ने इसकी रहस्यमयता को और भी घना तीव्र और व्यापक कर लिया है मानो समस्त चर-अचर विश्व के प्राण-प्राण में उसी का कुहरा छा गया हो। तो नारी एक रहस्य है, एक समस्या है, एक 'एनिग्मा' है–वह भगिनी-रूप में हो रमणी-रूप में हो या मातृ-रूप में। परन्तु नारी का रमणी रूप जो पुरुष के मन-प्राण में एक अनन्त पिपासा जगा कर उसे मूर्च्छित कर डालता है–पुरुष के लिए अथाह है और उसका थाह लेने जब बिचारा पुरुष बढ़ता है तो खो ही जाता है — ठीक जैसे आग में मोम की पुतली।

प्रेम जहां पुरुष के लिए एक सहज मनोरंजन का व्यापार है वहां वह नारी के लिए आत्मदान की परम पवित्र साधना के साथ ही चिर-मङ्गलमय साध्य है। साधना-साध्य की इस एकता को पुरुष परख नहीं सकता और न वह आत्मदान के अमर सौंदर्य को देख ही पाता है। वह जो कुछ-जितना कुछ देख या परख पाता है वह इतना ऊपर ऊपर का होता है इतना बाह्य होता है इतना अस्थायी होता है कि वस्तुतः उसे प्रेम के रसास्वादन का अवसर ही नहीं मिलने पाता और इसके पूर्व ही अपनी उफान पर खीझ उठता है।

यह है अभाग मानव की हृदयहीन प्रेमापासना !

नारी म आंच है पर अमृत भी है—आंच आप स नयन जान क लिए अमृत हृदय से हृदय का रस पीने वाले क लिए। परन्तु आश्चर्य की बात है कि मनुष्य नारी की आंच म ही उसकी ओर गिरता है और उस पर दया कर जब नारी अपने हृदय क अमृत म डुबाने चलती है तो आंच का जला मानव नारी क प्रति घृणा तथा कुत्सा क भावों स भर कर उसकी बेवफाई स्वच्छन्द स्वच्छन्दाचरण आदि का ढिंढोरा पीटता फिरता है। चटोरा हृदय रूप से रूप पर तितलियों की तरह फूल से फूल पर मडराता फिरता है हृदय का मधु तो उसे प्राप्त होता नहीं पालें काँटों म अटकता छिद जाती हैं।

पुरुष उतावला पुरुष काममोहित पुरुष नारी के नारी रूप को कौन कहे उसक रमणी रूप को भी नहीं समझ पाया—और न कभी समझ सकेगा ही। परन्तु फिर भी समझ लेने का दावा वह करता है और करता ही जाता है—जैसे लहरों स समुद्र क अतल अन्तस्तल को थाह चुका हो। प्रणय तो आत्माओं का परिणय है—काम पुरुष कभी इस समझता, और समझकर हृदयङ्गम कर पाता ! परन्तु वह क्या समझने लगा उसे क्या पड़ी है ? वह तो आंच से जला प्रतिहिंसा क विकार स ग्रस्त है उसे अमृतपान का अवसर ही कहाँ है ?

प्रस्तुत उपन्यास म विमल इसी भूल का एक 'टाइप' है। वह मंजु को प्यार करता है परन्तु रूपसी प्रेयसी मंजु को। वह उस

जीतना' चाहता है परन्तु उसके कल्याण के लिए मजु जब अपने हृदय का अमृत (रूप की वारुणी नहीं) पिलाने चलती है तो विमल अपना 'असफलता पर मल्ला कर घार प्रतिहिंसा से भर जाता है। इधर विमल प्रतिहिंसा की रौरव ज्वाला म जल रहा है उधर मजु आत्मदान की मङ्गलमयी वदी पर अपने को तिल तिल चढा रही है। रहस्य का पर्दा हटता है परन्तु तब-जब मजु का द्वार मृत्यु खटखटा चुकी है।

भाषा प्रवाहमयी है बात चीत सजीव। प्लॉट म एक विचित्र सादगी परन्तु साथ ही मनोहर मनोवैज्ञानिक गुत्थी है। चरित्र चित्रण मे कलाकार का अद्भुत मफलता मिली है और कुल मिलाकर मजु प्रथम प्रयास होने पर भी फिल्म के लिए एक बहुत ही सुन्दर सामग्री है और इसके प्रतिभाशाली लेखक प० श्री गोपाल जी आचाय बी० ए०, एल एल० बी० की इस कृति का साहित्य क्षेत्र म हृदय से अभिनन्दन होगा। आशा है आप हिन्दी को और अधिक सुन्दर उपन्यास भेंट करेंगे। आपका आरम्भ शुभ हो।

२१-११-४२ }   भुवनेश्वरनाथ मिश्र एम ए माधव

समेट कर उल्टा करके एक ओर मेज पर रख दिया। अब तक आगन्तुक कमरे में प्रवेश कर चुका था। बिहारी ने दरवाजे की ओर दृष्टि की। मुस्कराते हुए उसने कहा—

विमल—आओ

मिठाई की तजवीज कर चुके ?

अभी नहीं।

अब तक आगन्तुक मेज के पास आ चुका था। उसकी दृष्टि मेज पर पड़े उन चित्रों पर पड़ी। उसने उन्हें उठाते हुए कहा—

'किसे पसन्द किया ?

अभी कुछ ठीक नहीं।

अभी ठीक कर रहे हैं कहते हुए बिहारी ने पुस्तक चित्रों का

विचार जान ली ।

'क्या मतलब ?'

हो सकता है वह तुम्हारे साथ शादी न करे । यह मैं जानता हूँ वह तुम्हें प्यार नहीं कर सकती । उसकी वाणी म दृढ़ता थी । चेहरे के भाव यथावत् गंभीर थे ।

कुछ क्षण के लिए कमरे म शान्ति छा गई । विमल मजु के चित्र को देखते ही गम्भीर हो गया था । यह तथ्य बिहारी से छिपा न था । बात की बातचीत ने सारे वातावरण को गम्भीर बना दिया ।

मजु के विषय म मालूम होता है तुम बहुत जानते हो ।

मेरी उसमे दिलचस्पी है ।

तुम्हारे साथ शादी कर सकेगी ?'

यह मैं नही कह सकता । हम एक दूसरे को प्रेम जरूर करते हैं । तुम अपनी माग जारी रख कर उसे बदनाम न करो इसीलिए मैंने कुछ छिपाया नहीं ।

तुम्हें मजु प्यार करती है ?

जरूर ।

सिवाय तुम्हारे और किसी से शादी नहीं करेगी ?

मेरा यही विश्वास है । मजबूरन गर उसे किसी और से शादी करनी भी पड़ी तो भी वह उसकी नहीं हो सकती ।

'एक शर्त पर मैं अपनी पसन्द वापिस ले सकता हूँ विमल !

मैं उसे पूरा करने की कोशिश करूँगा ।

मैं सिर्फ जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे मुकाबले म वह मेरा हो सकेगी या नहीं । इसके लिये किसी बहाने से वह हम लोगों को अपने यहा बुलाये । कार्यक्रम के बीच मे मैं वहा से वापिस घर आने का बहाना करूगा । तुम्हें भी मेरे साथ ही एक बार उठ जाना होगा । मुझे इजाजत देकर गर आग्रहपूर्वक उसने तुम्हें रोक लिया तो मैं समझूगा कि वह तुम्हारी है । पिताजी को मेरा आखिरी निर्णय देने म अभी पाच दिन बाकी

है । म तुम्हे तीन दिन का मौका देता हू ।

इस तरह विहारी एक साथी के लिये अपने सुख का त्याग करने को तयार हो गया । थोडी देर के लिये कमरे म एक बार फिर शाति छा गई । विमल जाने को तयार हुआ । ज्यो ही उसने अपने कदम दरवाजे की तरफ बढाए पीछे से आवाज आई--

उसे यह भी कहना होगा--यहा की सब तयारिया विमल के लिए की गई है । आप जा सकते है --और कोई भी जा सकता है--सिर्फ विमल नही ।

विमल ने कदम रोक कर विहारी की इस बात को भी सुना । आवाज ब द होते ही उसने तुरन्त अपने कदम कमरे के बाहर बढा दिये और कुछ ही क्षणो म वह कोठी के बाहर हो गया ।

२

मजु विमल और बिहारी तीनो एक साथ स्कूल म पढे थे। कुछ अर्से तक कॉलेज म भी साथ रहा था। मजु रईस की लडकी थी। उसके पिता की मृत्यु एक अर्सा हुआ हो चुकी थी मगर मा जिंदा थी। अम्वया करीब बीस वष तक पहुँच गई होगी। अच्छा खानदान था। पसे का काइ कमी नही थी। सिवाय मजु के उसके पिता के और कोई सन्तान न हुई।

विमल के मात पिता का पता नही था। उसका पालन पोषण मठ के एक आचाय न किया था। वह उसे अपने पुत्र की तरह रखता था। उसीने उसे कालेज की ऊँची शिक्षा दिलवाई। मठ म रहते विमल को कभी किसी चीज की कमी का सामना करना न पडा। अपनी जरूरतो के लिए कभी भी उसे किसी और की सहायता का जरूरत न पडी। मठ म रहते उसने चित्रकला व अय ललित कलाओ का अपनी कालेज की शिक्षा के साथ साथ अच्छा अभ्यास कर लिया था। उसकी कला म भाव थे जीवन था सौन्दय था। इस समय ऊम्र पच्चीस वष से अधिक नही थी।

बिहारी के पिता एक बहुत बडे जमीदार थ। जमीदारी के अलावा उनका व्यापार क्षेत्र भी बहुत विस्तत था। सब तरह स परमात्मा की दया थी। आलीशान काठी, सवारियाँ नौकर चाकर सबका ठाठ था। विमल बिहारी के मुख्य मित्रो मे से था। विमल के लिए उसके दिल म प्रेम था। वह उसे श्रद्धा की दृष्टि से हमेशा देखता आया था। दोनो करीब करीब एक ही उम्र के थे।

इन तीनो साथियो की अब तक की उम्र प्राय कलकत्ते म ही बीती थी। थोडे ही दिन पहले इनकी बी० ए० की परीक्षा का नतीजा

पाया था।'

विमन बाबू ! आप ?

य मेरे साथ है बिहारी न कहा।

यहाँ का सब तयारियाँ ता विमल बाबू क लिये की गई हैं। आप ठहरते तो अच्छा था। आपके बहुत जरूरी काम है इसलिए क्या वह और किसी का साथ ल जाइये। सिर्फ इतना नहीं।' वे तीनों साथ साथ मकान के फाटक की तरफ बढते गये।

आप को विमल का बहुत ज्यादा खयाल है ?' बिहारी न कहा।

जी --जवाब आया।

आगे पीछे कोई नहीं है इसलिये।

म और आप जो है।

आपकी माताजी ऐसा पसन्द करेंगी।'

पसन्द मुझे करनी है माताजी को नहीं।'

अब तक मकान का बाहरी फाटक उन्होंने नजदीक ल लिया था। बिहारी ने दोनो स हाथ जोड कर इजाजत चाही और वह अपनी मोटर गाडी म बठ कर चल दिया।

मजु और विमल यथा स्थान वापस आ गये। कार्यक्रम पूर्ववत् जारी था। स्वर लहरी पहले से कुछ ज्यादा तेज प्रवाह म बह रही थी। कलाकार की चेष्टाओं म उसके पश्चात्ताप व भंगिमाओं म भी उसकी तेजी या प्रतिक्रिया ने अपना असर किया था। और साथियों के साथ व भी प्रसन्न म रसास्वादन लेने लगे। योजना के अनुसार कार्यक्रम चलता रहा। गान कविता सगीत सब हुए। पुन नृत्य हुआ।

इस समय रात के दस बज गये थे। ज्योंही आखिरी कलाकार ने अपने विषय की समाप्ति का आखिरी मुद्रा दी स्वर लहरी बन्द हो गई और करतल ध्वनि से कमरा एक बार और गूंज उठा। मेहमान सब-के-सब उठ खड़े हुए और थोड़ी ही देर म सब अपने अपने घर चल गये। विमल भी। सबको विदा करने के बाद मजु भी अपने कमरे म जा कर सो गई।

३

इस भाज न दूसर हा न्नि विमल फिर विहारा क यन्ना गया। प्रतिद्व ी के आगे भुरन म जो नाम हाता है वह विनाग क च र पर था। इसम पहल न्न दाना क स्याथ इस तरन आपस म न टकरात थ। तब व प्रति दूसरे का कभा स्पधा न हुई था।

कि तु आज भा दाना एक दूसर का शत्रु समभत थ। आपस म प्रतिद्वि दना होत हुए भी दाना एक दूसर का न्न विदवास करत थ। एक दूसर के खिलाफ जाल फनाने का कार्ड मवा न था। तब तीसर प्राणी पर दोना की आगाओ का भूना आश्रित था।

मजु की न्नव म त्रिगारी हार चुका था। विहारी मे मजु री विमल से छीना नही। मजु री मा की तरफ स प्रस्ताव आन क पहन त्रिहारी न मजु का पत्नी रूप म कभी खयाल तक न किया था। आज म पाँच दिन पहल वह उसका याद नहीं थी। मजु की माँ क भेज हुए चित्र न ही सिफ विहारी क लिए अधिकारो क ससार का रचना कर दी। अब वह अपने इस ससार पर एकाधिकार चाहता था। न जान क्यो ?

जिस समय विमल विहारा क कमर म पहुचा वह वहाँ नहा था। वह इन्तजार म वठ गया और समय विताने के लिए मज पर पड़ा तस्वीरा को दखने लगा। पहले देखा हुई पुरानी तस्वीरें थी। वह गुनगुनाने लगा। इतने म विहारी भी आ गया। उसने कमरे म प्रवेश करते ही कहा—

आ गए विमल ?

आना नहा थी ? जवाब आया। विहारी वठ गया।

रात को कब छुट्टी पाई।

'तुम्हारे चले आने के थोड़ा देर बाद।

और कुछ ?

तुम्हे विश्वास आया ?'

ल्तना ता आगया कि वह तुम्हार अधिकार म है—मगर तुम शादी कर सकोगे ?'

कोशिश करूगा।'

'गुरुदेव स आज्ञा ल ली ?

'उन्होने मरा क्षमा माग को अभी तक नही ठुकराया है। मुझे विश्वास है व आज्ञा दे देंगे।'

थोडी दर की शान्ति क बाद फिर प्रश्नोत्तर शुरू हुए। बिहारी ने कहा—

अपना निश्चय मुझे पिताजी को आज ही देना है।'

सुन सकता हू वह क्या होगा।'

"शादी नही होगी। अपने सुख क लिए तुम्हारी आशाओ का खून नही करूगा।'

बिहारी का चेहरा गम्भीर था। उसक भाव स्थिर थ। वह एकटक शून्य भाव से देख रहा था। विमल क चेहरे पर उसकी दृष्टि टिकी नही उनकी नजर परस्पर म मिली नही।

इसी बीच कमरे के दरवाज क आग से एक आदमी निकला। उसने एक क्षण क लिए अ दर देखा और चल दिया। यह आदमी शायद बिहारी के घर का नौकर था। किस हद तक इनकी गुफ्तगू उसने सुनी थी इसका अ दाजा अभी नही लगाया जा सकता।

थोडा दर बाद विमल कमरे से बाहर निकला। कुछ कदम चलने के बाद उसकी बिहारी के पिता स भेट हुई। व इधर उधर घूम रह थ। विमल न उन्ह देखते ही नमस्कार किया। व बात करने क लिय खडे हो गए।

तुम लोगो की पसन्द समाप्त हुई या नही ?'

'जी, अभी कुछ ठीक नही है।'

काफी दिन हो गय। इतना क्या सोचना है ?'

'जी'

तुमने मदद नही दी मालूम होता है।

'जी मैं' आगे उसके मुह म शब्द न निकले।

इतने म ही एक नौकर शायद बन्नो, जिसका जिक्र ऊपर आ चुका है कुछ कागजात व तस्वीरें लेकर एक किनारे आ खडा हुआ। ज्योही बिहारी के पिता का ध्यान इसकी ओर खिचा विमल नमस्कार करके चलता बना।

सेवक इशारा पाकर आगे बढा और अपने हाथो को आगे बढाते हुए बोला—

बडे बाबू ने दिए है। कहा है कि अभी म शादी नही करना चाहता।

'कारण ?'

मुँह से तो कुछ नही बताया'

तुम्हें क्या मालूम हुआ ?'

कुछ ठीक पता नहीं चला।'

'अच्छा अदर चलो।' कहते हुए बिहारी के पिता अपने कमरे की तरफ चल दिये। भीतर जाकर उन्होने उन कुल कागजात को देखा। हर प्रस्ताव के साथ का चित्र यथावत् था। मजु की माँ का प्रस्ताव सिर्फ बिना चित्र के था। उन्होने पूछा—

'कहीं कुछ डाल तो नहीं दिया ?

'जी नही इतने ही दिए थे।'

एक क्षण के लिए कुछ याद करने के लिए उन्होने अपने शरीर की बाहरी चेष्टाएँ बन्द सी करदी और मूर्तिवत् स्थिर हो गए। उन्हें शीघ्र ही याद हो आया कि उन्होंने बिना चित्र का कोई प्रस्ताव बिहारी के पास नहीं भेजा था। उन्होंने प्रश्न किया—

ग्रौर कुछ नही कहा ?'

जी नही।'

ढग से भी कुछ नहीं समझे ?'

जी 'आगे कहने की एकाएक उसकी हिम्मत न हुई।

क्या ?'

शायद विमल बाबू ग्रटकते है।'

बिहारी के पिता ने हस दिया। उन्हे अपने नौकर की बुद्धि पर शायद तरस ग्रा गया था। उनके मुह से शब्द निकला—

पागल'

मैंने अपने कानो से बडे बाबू को कहते सुना है। वे विमल बाबू से कह रहे थे कि अपने सुख के लिए तुम्हारी ग्राशाग्रो का खून नही करूँगा।' नौकर ने यह सब विश्वास दिलाने की नीयत से कहा।

'जानते हो विमल कौन है ?' मुस्कराते हुए उन्होने पूछा—मगर नौकर चुप रहा। अपना मतलब साफ करने के लिए उन्होने कहना शुरू किया।

विमल मठ का ग्रादमी है। भविष्य मे उसे मठ सभालना है। उसकी शादी नहीं हो सकती। यह कहते हुए वे कुर्सी पर से खडे हो गए। नौकर मौका पाकर कमरे के बाहर चला गया।

४

दोपहर में उस रोज़ बिहारी घर से बाहर निकला उसके पिता उसके कमरे में गये। इधर उधर देखने के बाद वे मेज पर सहारे था वह और उस पर पड़ी किताबों को सम्भालने लगे। थोड़ी देर बाद उनकी दृष्टि दराज की तरफ गई। वह खुला पड़ा था। उन्होंने उसे बाहर खींच कर देखा तो अन्दर एक युवती की तस्वीर थी। कुछ देर तक वे इस ओर से देखते रहे। उन्हें ख्याल आया कि इस लड़की को उन्होंने कहीं देखा है। तस्वीर को वापिस उन्होंने यथा स्थान रख दिया और वे कमरे से बाहर निकल आए। अपने पुत्र की पसन्द इस तरह उन्हें मालूम हो गई।

थोड़ी देर बाद बिहारी वापिस घर में आ गया। अपने कमरे में आने पर पाया। उसके बैठने की जगह मेज के सहारे की कुर्सी ही थी। वह उस पर बैठा था। पूर्व परिचित नौकर पानी लेकर आया। पानी एक घूंट पीकर बिहारी ने उससे कहा।

आज तुम्हें कुछ दूर एक काम जाना होगा।

चला जाऊंगा जवाब आया।

बिहारी ने दराज में से मंजु की तस्वीर निकाली और उसे एक बड़े लिफाफे में बन्द करते हुए कहा--

इसे विमल बाबू के यहां अभी ले जाना है। जानते हो न?

जी--मठ में जो रहते हैं?'

ठीक है। और किसी को न देना। गाड़ी भाड़े के पैसे जेब में से निकाल लो।

बिहारी ने लिफाफे पर विमल का नाम लिख कर उसे नौकर को पकड़ा दिया।

अपने मालिक की आज्ञानुसार नौकर विमल के यहा पहुँचा। उसने कमरे के अदर जा कर देखा तो उसे मालूम हुआ कि कमरे म अनेक सुन्दर सुन्दर चित्र टङ्ग रहे हैं। उसने लिफाफा विमल के हाथ म दे दिया और इधर उधर देखने लगा। उसकी दृष्टि कमरे की मुख्य जगह पर टङ्गी एक तस्वीर पर पडी। कुछ क्षण तक उसने इसे गौर म देखा। परिचित सा शक्ल थी। उसे यह जानने म देरा न लगी कि उक्त तस्वीर और लिफाफे की तस्वीर जिसे वह लेकर आया है एक ही शख्स की है।

विमल ने लिफाफा खोल कर देखा तो उस म मजु का चित्र था। वही चित्र जिसे उसने बिहारी के घर पर देखा था। उसने पूछा—

और भी कुछ कहा है ?

जी नहीं।'

बडे बाबू की शादी कब हो रही है ?

हम तो पहले आप ही जानियेगा।'

फिर भी कुछ तो मालूम हुआ होगा ?

अभी शादी करने म उन्होंने इन्कार कर दिया है।'

पिताजी ने समझाया नहीं ?'

इतना तो मुझे मालूम नहीं है।' ये सब आप बनाते हैं ?' नौकर का तस्वीरो की ओर इशारा था।

'और क्या ' सब मेरे हाथ की बनाई हुई है।'

'बहुत अच्छा बनाते है। 'एक बार पुन उसकी दृष्टि उन तस्वीरों पर दौड गई। अच्छा, नमस्ते कह कर नौकर चला गया। उसके चले जाने के बाद विमल ने मजु की तस्वीर को अपने हाथ म उठा लिया और उसे गौर से देखने लगा।

उसके चेहरे पर खुशी और होठो पर मुस्कराहट थी। अपनी खुशी म किसी गाने की धुन पर गुनगुनाने लगा

५

इस घटना के बाद जब नौकर बिहारी के पिता से मिला तब वे बड़े खुश मालूम होते थे। उन्होंने उसे देखते ही कहना शुरू किया।

बड़े बाबू की पसन्द हमें मालूम हो गई है। बहुत अच्छी लड़की को उसने पसंद किया है। बिहारी अन्दर है या नहीं ?

'बाहर गये हैं।

अच्छा। तुम उसके कमरे में जाओ। मेज के दराज में एक तस्वीर रखी है उसे ले आओ।

नौकर आज्ञा पाकर तुरन्त बिहारी के कमरे में गया और दराज को खूब अच्छी तरह देखा मगर उसे कोई तस्वीर वहां न मिली। वह समझ गया कि जिस तस्वीर को बिहारी के पिता मांगते हैं वह वही थी जिसे वह विमल को देकर आया है। वह उल्टे पांव वापिस लौट आया और कहा—

'वहां तो कोई तस्वीर नहीं है।

'तुम्हारा सर नहीं है' कह कर बिहारी के पिता अपनी आराम कुर्सी से उठने लगे।

नौकर ने कहा—

एक तस्वीर थी वह तो बड़े बाबू ने विमल बाबू के पास भेज दी है।

तुम्हें क्या मालूम ?'

मैं खुद देकर आया हूं।

क्या भेजा है कुछ मालूम है ?'

'मुझे तो यही कहा था कि इसे अभा द आग्रो । और किसा का न देना ।'

और कुछ नही कहा ?'

'जी, नहीं ।

विमन ने भी नही ?'

उन्हान बडे बाबू की नादा के लिय पूछा था ।'

तुमन क्या कहा ?'

मने कहा अभी उनकी इच्छा नहा है ।

'बस ?'

यह भी पूछा था कि पिताजी न समझाया नही ?

तुमने क्या कहा ?'

मैंन ता इतना ही कहा कि मुझे ज्यादा मालूम नहीं है ।

बिहारी क पिता दो एक क्षण किसी विचार मुद्रा म बठे रहे । नौकर ने कहना गुरू किया—

विमल बाबू के कमरे म उस लडकी की और भी कई तस्वीरें है ।'

'तुम्ह क्या मालूम ?

मैंने आखा से देखा है ।

वे फिर उसी मुद्रा मे मग्न हो गय । दो एक क्षण ता नौकर खडा रहा मगर उन्हें अपने विचारा म व्यस्त देखकर वह कमरे क बाहर चला गया ।

६

मठ के अधिकारी व विहारी के पिता की पुरानी जान पहचान थी। मगल दिन विहारी के पिता मठ के अधिकारी से मिलने गए। पारम्परिक अभ्यर्थना के थोड़ी देर बाद विहारी के विवाह की किस्सा छिड़ा। विहारी के पिता ने कहा—

'चाहता हू विहारी की शादी हो जाय।

'आपत्ति ही क्या है। बी० ए० पास तो कर ही चुका। उम्र भी काफी हो गई है। अब देर करना उचित नहीं है।'

आपने विमल के लिए क्या सोचा ?

'उसका पथ तो निश्चित है मणिबाबू। 'मठ के भविष्य की चिन्ता ही सब उस पर निभर है।

'आपके नियमों को वह निभा सकेगा ?

क्या कहते ह मणिबाबू ?

कालेज की शिक्षा दिला कर फिर आपने उसे दाव रास्ता न पकड़वाया अधिकारीजी !'

आप भूलते ह मणिबाबू ! आत्म विकास के लिए इस शिक्षा का होना भी जरूरी था।

आप नहीं समझे अधिकारी जी। वातावरण का असर नव युवकों पर बड़ा बुरा पडता हैं। मठ का जीवन त्याग पर निभर है और सासारिक जीवन स्वार्थ के सहारे। त्याग और तपस्या के जीवन से परे ले जाकर आप विमल को त्यागी और तपस्वी नहीं बना सकते। यह म कह सकता हू कि आपने उसे एक अच्छा नागरिक बना दिया जो अपना घर अच्छी तरह बसा लेगा।

मणिबाबू के कथन पर अधिकारीजी को आश्चर्य हुआ और साथ ही उनका यह भाव हँसी बनकर तुरन्त प्रदर्शित भी हो गया। हँसी रुकने के बाद वे बोले—

'आप सब को एक जैसा समझते हैं, मणिबाबू !'

'जरूर अधिकारीजी ! परमात्मा ने तो सबको एक जैसा ही बनाया है। स्वार्थ और मोह का परित्याग मनुष्यों में स्वाभाविक नहीं। यह तो सिर्फ अभ्यास की वस्तु है।'

'विमल ऐसा नहीं हो सकता मणिबाबू।'

'यदि मैं कहूँ कि विमल को संसार और उसकी सांसारिकता में रुचि है और वह अपना घर बसाने की इच्छा रखता है आप मानेंगे ?'

'बिल्कुल नहीं।' उनके उत्तर में आत्मविश्वास की झलक थी। मुँह की वाणी व चेहरे की मुद्राएं दोनों उस आत्मविश्वास को प्रदर्शित करते थे।

'विमल को आपने चित्रकला की शिक्षा दी है ?'

'जरूर।'

'एक कलाकार की कला उसके भावों तक ही तो सीमित है ?'

'बहुत अंशों तक।'

'आप देखते हैं इतने बड़े मठ में किसी त्यागी और तपस्वी का चित्र तक नहीं है। यदि साधन युक्त कलाकार दस वर्षों में एक भी ऐसा चित्र तैयार न कर सके जिसे देख कर इन्सान को श्रद्धा और भक्ति में नत मस्तक होना पड़े तो इस तथ्य का आप क्या अर्थ लगायेंगे ? क्या कलाकृति कलाकार की स्वाभाविक प्रवृत्ति की द्योतक नहीं है ?'

मठ के अधिकारीजी के पास इस बहस का कोई माकूल जवाब न था। मणिबाबू के गम्भीर भाव ने अपने श्रोता पर काफी असर किया। एक गम्भीर छाया उनके चेहरे पर आच्छादित हो गई। थोड़ी देर की शान्ति के बाद मणिबाबू ने फिर कहना शुरू किया—

आपको गौरव है कि विमल को चित्र बनाने का शौक है। कैसा शौक ? उसकी कला म जीवन है। कैसा जीवन ? उस वर्षों का निरन्तर अभ्यास है। कैसा अभ्यास ? मठ का भावी अधिकारी त्याग के वातावरण म रहते हुए भी अगर अपनी कला म नारीत्व की शृंगारमयी चेष्टाओं का ही दिग्दर्शन करा सके तो इसम मठ की क्या शान रही अधिकारीजी ! विमल जैसे कलाकार के होते हुए भी गर मठ महापुरुषों के चित्रों से त्याग और तपस्यामयी परम्परा से शून्य रहे ता सोचने वाली जनता को भविष्य म निराशा ही होगी। उसकी कला उसे किस ओर ले जा रही है इस पर आपने आज तक विचार तक भी न किया शायद यौवन पर अंकुश की बात आपके मस्तिष्क मे नहीं आई। क्यों ठीक है न अधिकारीजी ?

मणिबाबू ने अपना वक्तव्य पूरा किया ही था कि दो तीन दूसरे आदमी कमरे म दाखिल हुए और अधिकारीजी को वन्दना करके एक ओर बैठ गए।

मणिबाबू ने देखा कि अभीष्ट वार्ता के लिए उपयुक्त अवसर नहीं है। काफी समय हो चुका था। वे अधिकारीजी की आज्ञा प्राप्त कर उठ खड़े हुए और थोड़ी ही देर म अपने घर के लिए रवाना हो गए।

७

रात का समय था। मठ के चारा ओर सुनमान था। मठ म भी शाति थी। उसम निवास करने वाला की चहल पहल भी करीब करीब बन्द हो चुकी थी। विमल अपने कमरे म बठा एक बडे चित्र की रूप रेखा बना रहा था। मठ क आचार्य ने उसके कमरे म प्रवेश किया मगर वह इतना अधिक ध्यान मग्न था कि उनके आगमन का भी उसे भान तक न हुआ। अपनी विचार धारा म अपनी तूलिका स अपने सामने के चित्र का कुछ मृदुल स्पर्श देता हुआ वह कुछ स्वर गुनगुनाता जा रहा था।

मठ के आचार्य न एक क्षण तक तो उसके गुनगुनाने की ओर ध्यान दिया और फिर वे दीवारा म टगे चित्रों का अपने शात भाव स निरीक्षण करने लगे। उन्हें महसूस हुआ कि मणिबाबू के कहने म बहुत कुछ सत्य था। कमरे म सवत्र रगो की तडक भडक मे विलासिता मुखरित हो रही थी। इधर उधर सरसरी नजर दौडाने के बाद उनकी नजर एक चित्र की तरफ स्वत खिच गई। कुछ क्षण तक अपनी निगाह वे उस पर स न हटा सके। थोडी देर एकटक इस देखने क बाद उनके मुह से शब्द निकला--

विमल !

आवाज विमल के काना तक पहुँच गई। उसने घूम कर देखा अधिकारीजी थ। वह सम्मान मे खडा हो गया। जवाब म उसने कहा—

नमस्ते गुरुदेव !

वह गुरुदेव के निकट चला गया। गुरुदेव की नजर अब भी उस चित्र की तरफ ही थी। उन्होंने प्रश्न करने शुरू किये--

यह तुमने बनाया है ?'
'हा गुरुन्व !'
किसका है ?
'एक कुमारी का ।'
इस जानते हो ?'
जी ।'
'कसे बनाया ?'
सामने बिठाकर ।'
'कहा ?'
क्सी कमर म ।'
कितन न्नि लगे ?
करीब बीस न्नि ।'
समय ?
करीब करीब रात को ।'

मठ म पले विमल म सच सच कहने का सान्स था । मठ के अधिकारी ने इस सच का गम्भीरतापूवक सुना । थाडा दर की शान्ति के बाद उ हाने फिर पूछा--

'तुम्हारी इसकी क्या जान पन्चान विमन ?
हम कॉलेज क साथी रह है गुरन्व ।
आजकल भी स्सका आना जाना है ?'
जी नही ।'
क्या ? मना कर दिया ?'
मने मना नही किया ।
फिर ?'
जी ।'

वह चुप रहा । अधिकाराजा की प्रश्नमयी दृष्टि उस पर स हटा नही । क्षण एक क विराम क बान उनक मुह स शान्न निकल -- मैं

पूछता हू, ग्राजकल मिलना कैसे होता है ?''

मे स्वय चला जाता हूँ ।'—उसकी दृष्टि क्षण एक के लिये उठी भी पर पुन तुरन्त झुक गयी। उस समय अधिकारीजी शून्य म देख रहे थे।

मठ के कल्पित भावी नासक का जीवन इस कदर मसरमय अधिकारीजी न देखना चाहते थे। उन्होंने निरीक्षण म अपने कदम और आगे बढाये। एक एक चित्र को उन्होंने ध्यान से देखा पढा। उन्होंने महसूस किया कि मठ के इस चित्रालय म त्याग और तपस्या के जीवन का अश तक विद्यमान नहीं है। सामारिकता को विलासिता को सर्वत्र उन्मुक्त रूप म उन्होंने यहाँ हँसते खेलते, नाचते देखा। मठ के वाछित जीवन की उसके तपोमय वातावरण की यहा किसी रूप और अश म अभिव्यक्ति अथवा झलक नहीं थी। उन्हे रज हुआ।

अधिकारीजी के खयाल मे जीवन का सहज प्रतिकरण मात्र ही कला नहीं थी। निरा हुआ इन्सान जिसकी प्रेरणा से उठे नहीं जिसकी अभिव्यक्ति प्रगति म प्रेरक न हो, जिसके देखने से विभिन्न अभावों की पूरक परिस्थितियों की ओर आवश्यक प्रयत्नों और प्रयासों की ओर आह्वान अथवा सकेत न मिले, उसे वे वास्तविक रूप म कला नहीं समझते थे। कला के विषय म उनके अपने स्वतन्त्र विचार थे जिन्हे वे आदर्श के रूप म मान देते थे। इन आदर्शों को ही वे कला का प्राण समझते थे। मठ के इस कला भवन मे किसी रूप अश म आदर्श को अपने स्थान म न पाकर उनका मन खिन्न हो गया। मठ से प्रभावित विमल के जीवन की सत्यता और साहस पर उनका ध्यान इस समय आकर्षित न हुआ। वे अपने ही विचारो मे व्यस्त थे। अपने भाव विमल को प्रकट करने की नीयत से उन्होंने कहना प्रारम्भ किया—

आदर्श का स्थान कला से ऊचा है विमल !—विशेषकर मठ वासियों के लिये। मठ म रहने कला के वहाने एक होनहार युवक पथ भ्रष्ट हो यह मे नहीं देख सकता। यही रहते कला को तुम्हे एक नए रूप

म ेखना व वरनना होगा । कन ये सारे चित्र जगा लिये जायेंगे । तुम्ह र अ न होना चाहिय । और सुनो । नना का श्रय जीवन के उत्साहन म है । अवसादन म नही ।

विमल न अधिकारीजी के वक्तव्य व उनकी कठिन आज्ञा को धय से सुना । गम्भीर स्वर म निकले हुए हन अधिकारपूण शब्दा व आगे इस समय विमल की वाणी मुक्त न हुई । गुरुजनो क प्रति शिष्टाचार ने उसक सयत स्वभाव को इस समय और भी अधिक सयत बना दिया था । उसकी वाणी खुली नही । होठ हिले नही । दृष्टि उठी नही ।

अधिकारीजा क कमरे के बाहर चले जाने क बहुत देर बाद तक भी विमल क काना म उनक अधिकारपूण निश्चय क शब्द गूजते रहे ।

८

अधिकारीजी के निश्चय के अनुसार अगले ही दिन विमल का कला भवन पुन पुराने मठ की एक नीरस कोठरी मे परिवर्तित हो गया। उसकी कला के नमूनों की जली हुई होली खाक बन कर इस कोठरी की दीवाल के सहारे कुछ बिखरी पडी थी। और कुछ इधर उधर चारों ओर बिखर रही थी।

विमल ने झरोखे मे से इस राख के सहज प्राकृतिक बिखराव को देखा। उसकी आंखें आंसुओं से छलक आई और उसमें से दो बूंद बाहर बह निकले। हवा का झोका आया और देखते देखते निरन्तर झोंके शुरू हुए। विमल ने देखा कि उसकी मेहनत की आखिरी निशानी भी धीरे धीरे उसकी आंखों से ओझल हो रही है।

इस दृश्य को वह और ज्यादा देर तक शायद न देख सका। उसने झरोखे को बन्द कर लिया और कोठरी की चार दिवारी में अपने आपको छिपा लिया। किसी ने नहीं देखा किसी ने जानने की चेष्टा नहीं की कि विमल किस तरह कोठरी म एकान्त पड़ा अपना समय काट रहा है।

दिन खत्म हुआ। अंधेरा आया और फिर रात पड गई। विमल ने आज किसी से मुलाकात नहीं की। जिन्दगी म पहली मरतबा आज उसने महसूस किया कि दूसरों के सहारे जिंदगी बसर करने वालों के कोई अधिकार नहीं होते। अपनी परिस्थिति म किसी भी प्रतिवाद के लिए वह असमर्थ था। उसे दुःख था कि पिता की तरह पालन करने वाले अधिकारीजी भी उसके भावों की इज्जत न कर सके। और दुनिया में वह किस पर विश्वास कर सकता था। मंजु से शादी की आशा, मठ मे रहने

एक दूर की बात हो गई थी। आशा के स्वप्नों को मिटाता हुआ वह अपनी चारपाई पर सो गया और कुछ देर बाद उसे नींद आ गई।

काफी रात बीत गई थी। मठ की चारदीवारी की तरफ एक सजीव छाया बढ़ी चली जा रही थी। साथ में कोई नहीं था। चाँदनी का प्रकाश चलने वाले को रास्ता दिखाने के लिए काफी था। आगन्तुक के ढंग से मालूम होता था कि वह अपने पथ से खूब परिचित है। कुछ ही देर में वह सशरीर छाया मठ की एक कोठरी के पास आकर रुक गई। बिना किसी संकोच के एक हाथ ने खिड़की को धक्का दिया मगर बन्द था। आगन्तुक का शरीर एक क्षण के लिए मूर्तिवत् खड़ा रहा मगर मात्र ही वह चंचल हो गया। दो कदम दूर पत्थर के टुकड़े को उस ने झुक कर उठा लिया और इतमिनान से द्वार को खटखटाने लगा। आवश्यक प्रतीक्षा के बाद आवाज आई—

विमल। मगर कोई जवाब न मिला। एक क्षण इन्तजार के बाद फिर कोमल स्वर में किसी ने पुकारा—

विमल!

कोठरी के अन्दर किसी चीज के गिरने का शब्द हुआ और उसके साथ ही क्षीण स्वर में सुनाई दिया—

गुरुदेव! वक्ता की वाणी में आकस्मिक चौकन्नापन था।

कोठरी के बाहर से आवाज आई—

गुरुदेव नहीं। मैं मंजु।

विमल जाग गया। उसने उठ कर दरवाजा खोला। बाहर मंजु खड़ी थी। देखते ही उसके मुँह से शब्द निकले—

मंजु तुम!

जवाब आया हाँ।

इतनी रात गए यहाँ?

तुम जो अपने वादे को भूल गये! पहले बाहर आओ।

मंजु का आदेश पाकर विमल मठ के बाहर आ गया। वे दोनों

कहा था—

यह सब धोखा है विमल !

अधिकारीजी व विमल अब तक अलग अलग हो चुके थे। अधिकारीजी के शब्द सुनते ही विमल के मुह से निकला—

वह धोखा नही दे सकती गुरुदेव !'

गुरुदेव के कानों तक उसकी आवाज पहुँच चुकी थी। उन्होंने इसे सुना और वे कोठरी के बाहर चले दिये।

आधी चली खूब तेज चली और बन्द हो गई। विमल अपनी कोठरी म विचार मग्न बैठा था। बाहर से दरवाजा खुला और एक युवक ने प्रवेश किया। मठ का ही आदमी था। विमल जानता था कि अधिकारीजी अपने शासन म कितने कठोर है। वह उस आज्ञा का उनके आखिरी निश्चय का बखूबी अन्दाजा लगा सकता था। आगन्तुक ने अधिकारीजी की आज्ञा विमल को कह सुनाई और वह बाहर चला गया। उसे सुनने के बाद विमल की आखो से आँसुओ के श्रोत खुल गए। इससे ज्यादा अधिक बोझ विमल पर अधिकारीजी की कठिन से कठिन आज्ञा भी नही डाल सकती थी।

उन्होंने कहलाया—

मै अपनी आज्ञा वापिस लेता हू।

धीरे धीरे कुछ दिन बीत गये ।

विमल को करीब करीब मठ में छुट्टी मिल गई थी । मठ का खाना बनाने वाला अब उसका इन्तजार नहीं करता था । द्वारपाल उसके आने की राह नहीं देखता था । चाकरों को उसकी गतिविधि देखने में अब दिलचस्पी नहीं थी । थोड़े दिन बाद विमल ने भी इस बात को महसूस किया कि वह मठ का होनहार अधिकारी नहीं रहा है । आँखों की शर्म को छोड़कर मठवासियों का बर्ताव उसके साथ गैर सदस्य का सा हो गया था । उसकी कोठरी में अब कोई सफाई करने तक नहीं आता था । अनेक मौके ऐसे हुए जब उसे निज के हाथों अपनी कोठरी में झाड़ू लगाना पड़ा ।

एक दिन विमल को शहर से आने में कुछ देर होगई । कुछ अधिक रात बीत गई थी । दरबान ने उसे दहलान के साथ द्वार खोल कर उसे मठ के भीतर लिया । एक ऐसी रात भी गुजरी कि विमल को मठ के द्वार पर घंटों इन्तजार करने के बाद भी वापिस लौटना पड़ा । वह रात उसने अनाथों की तरह रास्ते के एक चबूतरे के टुकड़े पर सो कर बिताई ।

उसके लिये भोजन की व्यवस्था का भी मठ में यही हाल था । एक से ज्यादा मौके ऐसे गुजरे जब थालों को पूछने पर उसे निराशापूर्ण उत्तर मिले और वे दिन उसे भूख की ज्वाला में ही गुजारने पड़े । अनेक बार थालों का कहने पर उसे उत्तर मिला—

आपने बहुत देरी कर दी । आप कह कर नहीं गये थे, हमने

दवा आप खाकर आयेंगे।'

विमल एस उत्तरों को सुनता और बगैर किसी शिकायत के अपनी कोठरी में चला जाता। ऐसी परिस्थिति में भी उसने कई दिन मठ में रहते गुजारे।

नहीं कहा जा सकता कि विमल के साथ मठ में इस प्रकार का व्यवहार क्यों होने लगा? थोड़े से अर्से में उसकी मठ की दुनियां इस हद तक क्यों बदल गई? यह सत्य है कि मठ क्षेत्र में यह परिवर्तित परिस्थिति तथ्य रूप में स्थिर हो गई थी।

अधिकारी जी का आदेश? नहीं। ऐसा वे नहीं कर सकते थे। वे कोई ऐसी आज्ञा नहीं दे सकते थे जिससे विमल को दुख हो काई कष्ट हो।

ऐसा खयाल तो सिर्फ वही कर सकता था जो अधिकारीजी के हृदय से अनभिज्ञ हो। जो उनके सम्बन्ध में कुछ भी जानकारी न रखता हो।

वास्तव में विमल और अधिकारीजी की पारस्परिक विचार भिन्नता की बात उस वातावरण की हवा मठ भर में फैल गई थी। उसी ने सबको कह दिया था। सबको मालूम हो गया था कि विमल ने अधिकारीजी को—उनके भावुक हृदय को—सख्त चोट पहुँचाई है। वह अब मठ का कोई नहीं रहा है। दूर भविष्य तक उन्होंने देख लिया था विमल के हाथों उनके स्वार्थों को अब कोई हानि नहीं पहुंच सकता। फिर विमल उनके क्या लगता था? वे उसकी चिन्ता—उसकी सहूलियत का खयाल क्यों रखते?

धीरे धीरे विमल ने अपनी आदत बदली। कुछ ही दिनों में परिस्थिति के अनुकूल उसने अपने आप को बना लिया। खाने के लिये शहर के विभिन्न भोजनालय खुले थे। उसने उन में खाना शुरू कर दिया। अगर ज्यादा देरी हुई देखता तो शहर के ही किसी स्थान में अपनी रात गुजार देता। मठ के मेहरबान के एहसान उठाने की अब जरूरत न थी।

मठ जाने म ज्यादा देरी हा जाने के कारण विमल एक दिन शहर के एक भोजनालय म अपनी क्षुधा शान्त कर रहा था। पास ही कुर्सी पर मेज के सहारे मंजु बैठा था। भोजनालय के एक कर्मचारी ने उसे अभी अभी एक गिलास शरबत ला कर दिया। न जाने क्यों उसने उस गिलास को उठाया ही था कि बिहारी भी वहां कहीं से आ पहुँचा। विमल और मंजु को देखते ही सीधा वह उनके पास आ गया। मंजु ने कर्मचारी को एक गिलास और लाने को कहा और अपना बिहारी की ओर बढ़ा दिया। बिहारी ने वापिस लौटाते हुए कहा—

'किसी की प्यास पीना अच्छा नहीं।

किसी की प्यास नहीं है। आप शौक से स्वीकार कीजिये।' मंजु ने वापिस हाथ बढ़ाते हुए कहा।

इस बार बिहारी ने आनाकानी न की और दूसरा गिलास आने तक उसने मंजु के हाथ से उसे लेकर अपने सामने मेज पर रख लिया।

थोड़ी देर म दूसरा गिलास भी आ गया। विमल खा रहा था। वे भी पीने लगे। बिहारी से खामोश रहते न बना। उसने मंजु से पूछा—

अब क्या कहकर पुकारा करूं ?

'मंजु। क्या नाम भी भूल गए ? मेरे नाम में चिन्ह होगई है ?

यह तो बहुत पुरानी बात है।

पुराने संस्कारों को ही भुला देना चाहते हैं ? नए हम हए कहाँ ?

मुझे इससे खुशी है, मंजु !

सुना ? विमल की ओर इशारा करते हुए मंजु ने कहा।

सब सुन रहा हूं कहते हुए विमल मुस्करा दिया।

थोड़ी देर बाद व्यावहारिक चर्चा में संलग्न वे भोजनालय से बाहर सड़क पर आगये।

समय बीतता गया । विमल का शहर के भोजनालया की नरण लिए अब एक महीने से भी कुछ ज्यादा हो गया था । एक दिन अरुणोदय के समय वह मजु के मकान पर पहुँचा तो उसे मालूम हुआ कि वह बीमार है । मकान के नौकर ने यह खबर उसे मकान के अन्दर दाखिल होने से पहले ही दे दी थी ।

वह उस कमरे में गया जहा मजु सो रही थी । पलग के पास दो तीन कुसिया रखी हुई थी । मेज पर दवाइयो का ढेर सा लगा हुआ था । मजु की माताजी पलग के सरहाने बैठी अपनी इकलौती पुत्री के सर पर भीगी हुई सफेद पटिटया रख रही थी । जिस समय विमल पहुचा मजु की आखें बन्द थी । वह एक खाली कुर्सी की पीठ पर हाथ रख कर पलग के सहारे खडा हो गया । कुछ क्षण तक मजु के मुरझाए हुए चेहरे की तरफ देखता रहा मगर मुह से एक शब्द न निकाल सका । विमल के चेहरे पर मुदनी छा गई और कुछ क्षण तक मूर्तिवत वह खडा रहा । अब उसकी आखें मजु की तरफ नहीं थी बल्कि नीचे की ओर जमीन की तरफ थी । वह कुछ सोच रहा था ।

कमरे की शान्ति भग करते हुए विमल ने पूछा—
क्या हुआ था माताजी ?
भगवान जाने, विमल ! परसो रात से यही हाल है ।
डाक्टर को दिखाया ?'
कई बार दिखा चुकी ।'
क्या कहा उसने ?

डॉक्टर ने तो कहा है—समय लगेगा । डर की कोई बात नहीं है। मगर डॉक्टर सब ऐसा ही कहते हैं । मुझे उन पर विश्वास नहीं है विमल !'

बातचीत सुन कर मंजु की आँखें खुलीं । उसने क्षीण स्वर में पूछा—

'कब आए ?

आया ही हूं ।

जल्दी तो नहीं है ?

'नहीं मंजु !' जवाब देकर विमल ने पूछा—

तबियत कैसी है ?

ठीक हो जायगी ।

खास तकलीफ तो नहीं है ?'

कोई ज्यादा नहीं ।

विमल पलंग के सहारे कुर्सी खींच कर बैठ गया जिससे मंजु को बोलने में ज्यादा तकलीफ न उठानी पड़े । उसने मंजु के हाथ का स्पर्श किया । उससे खूब गर्मी निकलती थी । शायद बहुत तेज बुखार था ।

इतने में ही घर का नौकर, डाक्टर का हाथ थैला लेकर कमरे में दाखिल हुआ । डाक्टर साहब पीछे पीछे दाखिल हुए । मंजु की माँ ने अब अपनी जगह छोड़ दी थी । विमल भी खड़ा हुआ और अपनी कुर्सी डॉक्टर साहब के आगे सरका दी ।

डाक्टर साहब ने अपने थैले में से कुछ परीक्षण-यन्त्र निकाले और उनकी मदद से वे मंजु की शरीर परीक्षा करने लगे । विमल ने यन्त्र थामने आदि में उनकी मदद की । थर्मामीटर ने बताया कि मंजु के शरीर का ताप परिमाण १०४ डिग्री से भी कुछ ज्यादा था । डाक्टर साहब ने उसे देखा और मंजु के पूछने पर अपनी जाँच का परिणाम सच सच कह दिया । उनके निदान से बुखार ने मियादी की शक्ल अख्तियार

कर ली थी परन्तु उनकी राय में चिन्ता करने की कोई वजह नहीं थी। उन्होंने अपने थैले में से एक ग्राफ कागज़ निकाला और उसे मेज़ पर रखते हुए पूछा—

'आपके पास कौन रहेगा ?' उनका इशारा मजु की तरफ था।

कहिए जवाब आया। वाणी विमल की थी।

इस कागज पर हर दो घंटे का ताप परिमाण दर्ज करना है। थर्मामीटर से जो रीडिंग आपको हो वह इस पर दर्ज करवा दें। रोग की असली चाल का पता चलता रहेगा।

उन्होंने किस प्रकार ज्वर की गति लिखनी है समझा कर ग्राफ कागज व थर्मामीटर विमल के हाथ में दे दिये और अपना बाकी सामान उठा कर कमरे के बाहर चली गई थी। उसे देखते ही डाक्टर साहब ने कहा—

कोई डर की बात नहीं है।' और वे चले गए।

विमल ने मजु के घर ही खाना खाया। थोड़ी देर में नौकर दवा लेकर आया और डाक्टर साहब के आदेश के अनुसार विमल ने उसे मजु को खिला दिया। विमल के आ जाने के बाद मजु की माँ का बहुत कुछ काम हल्का हो गया था।

मजु को अपनी बीमारी से छुटकारा पाने में तीन सप्ताह से भी कुछ ज्यादा ही समय लगा। इस अर्से में विमल बराबर उसकी सेवा करता रहा। ज्वर की गति जानने के नक्शे से अच्छी तरह पता चल सकता था कि विमल ने अपने जिम्मे के काम में लापरवाही बिल्कुल नहीं दिखायी है। इस अरसे में एक भी दिन या रात ऐसी नहीं गुजरी जिसमें ठीक दो-दो घंटे के बाद विमल ने ज्वर का ताप दर्ज न किया हो। इस तीन सप्ताह के लम्बे अरसे में विमल ने अपने आराम को मजु की बीमारी की भेंट चढ़ा दिया। मजु को खुद को आश्चर्य था कि उसके मुह से निकले क्षीण से क्षीण शब्द भी विमल के कानों तक पहुँच जाते थे। उसके मुह से निकली हुई कोई पुकार इस लम्बे अर्से में अनसुनी न

गई । सुनसान रात्रि में मंजु के मुंह से निकली हुई आहें कई बार विमल को बीमार के पलंग के सहारे ला खड़ा करतीं । वह वृद्ध ध्यान से बीमार के मुंह की तरफ देखता और जब उसे विश्वास हो जाता कि उस तक पहुंची हुई आवाज सिर्फ बीमार का कराहना मात्र था तब वह फिर वापिस अपनी जगह जा बैठता । मंजु की मां ने विमल की सेवा को देखा और उसके दिल में मंजु के साथी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई ।

मठ स दूर सरकने लगे ।

इतनी रात गए क्या आई ?

पहली मतबा थोडे ही आई हूँ ।'

किसी ने देख लिया फिर ?'

देखा ता बहुत बार है ।'

बहुत बार देखा है ?

हा, विमल ।

किसने ?'

बहुतो न ।'

अधिकारीजी ने भी ?

सिफ उ-ृाने नही ।

किसी न कुछ कहा नही ?

अब व कुछ नही कहते । वे जानते है मैं तुम्हार पास आती हूँ ।

'जानती हो इसका क्या नतीजा होगा?'

हा ।

फिर ?

मैं उसे सह लूगी। अटल निश्चय की वाणी के साथ उसके चेहरे के भाव भी अटल थे।

विमल मजु के जवाब को सुन कर चकित रह गया। औरत अपने वादे को किस हद तक निभाने का साहस रखती है यह उसे मालूम हो गया। अपनी असहाय स्थिति स उसे अपमान की अनुभूति हुई। कुछ दूर तक वे शान्ति मे चले। मगर वह इस समय अपने को मजु क योग्य नही समझ रहा था। मठ काफी दूर पीछे छूट गया। बैठने का उपयुक्त स्थान चलते चलते अब सामन आ गया था। वे दोनो पास पास बठ गए। विमल के चेहरे का खिन्न शान्ति मे उसकी अस्वाभाविक उदासीनता से वह समझ गई कि कुछ नई बात पता हुई है। फिर भी उसने उसे जानने के लिए व्यग्रता नही दिखाई। आस्वस्थ बठन क बाद सिफ सरल भाव स

पूछा—

तुम आए नही ?' विमल चुप रहा। क्षण एक विराम कर उसने फिर वही प्रश्न दोहराया। वह बोली— तुम आये नही ? क्या ?

म नही आ सका मजु।

कारण ? विमल फिर भी चुप रहा। उसके मन मे शब्द निकल नही रहे थे। वह बोली?—माताजी के आगे मैने बिहारी की तान चलाई थी।

क्या कहा उन्होंने ?

सुन सकोगे ?

क्या नही ? तुमने भी तो सुना है।

शादी के सम्बन्ध मे वे मेरी कोई राय जानना नही चाहती हैं। और इतना कह वह एकाएक विमल से लिपट गई। एक सुख हसी का सहारा लेते हुए उसने पूछा—

यही कहने के लिए आई हो ? ख्याल बुरा नही है। विमल के चेहरे को हाथ मे अपनी ओर करते हुए वह बोली— तुम्हे क्या हो गया है ? कब विश्वास आएगा तुम्हे ?

मेरा ख्याल गलत था मजु। म विवाह न कर सकूगा। उसका चेहरा गम्भीर हो गया।

क्या मतलब ?

तुम्हे योग्य वर के साथ शादी करनी चाहिए।

'और तुम ?

म तुम्हारे योग्य नही हूँ मजु। मठ के बिना मेरी कोई हस्ती नही है। यहा म अलग हो जाने के बाद पसे पसे का मोहताज हू। मठ म रहने मे सब कुछ है। यहाँ मे निकल जाने के बाद कुछ भी नही। मा नही बाप नही पैसा नही घर जायदाद नही किसी प्रकार का कोई आश्रय नही—कुछ भी तो नही है। जीवन की जरूरतो को पूरा करने का कोई जरिया मेरे पास नहीं है, मजु।

और कभी होगा भी नहीं ? आगत से आगे अनागत की ओर उसका संकेत था। सुन कर विमल बोला—

'यह भविष्य की बातें हैं मजु। उस पर आशाएं बांधना बेवकूफी है।—उसकी वाणी में क्षीणता और निराशा थी। पर उस मजु ने उसके वक्तव्य की ओर ध्यान ही नहीं दिया। वह बोली—

विवाह को दूर ले जाने के लिए मुझे कलकत्ता छोड़ना पड़ेगा मगर तुम मेरे साथ रहोगे।'

'यह नामुमकिन है मजु। वही निराशा की क्षीणता उसके शब्दों में थी। उसने सुना—

क्या ?

मैं मठ का आत्मा हूं इसलिये।

यह तो मैं जानती हूं।

मुझे गृहस्थ की बहू-बेटियों के साथ अपना सम्पर्क नहीं बढ़ाना चाहिए मजु। मैं अपना घर नहीं बसा सकता।

यह तुम अब सोचते हो ?

'अब भी ऐसा सोचने में कोई हर्ज नहीं है मजु।

'फिर मुझे धोखा क्यों दिया ?

मैंने धोखा नहीं दिया। आश्रमवासी ऐसा कर भी नहीं सकता। और यह कहते हुए उसने मजु की आंखों में एक आत्मिक व चारित्रिक विश्वास को गम्भीर दृष्टि से देखा। मजु उसका मन्तव्य समझती थी। क्षण एक विराम कर वह बोली—

तुम पीछे हटना चाहते हो विमल। मठ के बहाने अपने साथी की आशाओं का खून करना चाहते हो और वह भी इतनी दूर ले जा कर जहां से वह वापिस नहीं लौट सकती। पुरुष के साहस की यही सीमा है विमल ! क्या इसी साहस के सहारे तुम संपर्क और संबंध स्थापित करने चले थे। ऐसे साहस के सहारे क्या जीवन बनते हैं ?

पुरुष का साहस ! इसे तुम अभी नहीं समझ सकती मजु। तुम

परिस्थितियों को नहीं मानती। तुम्हें मजबूरियों का ज्ञान नहीं है। साहस की दिशाएं भी कुशलता की ओर होनी चाहिए।

तुम्हारे पीछे हटने का मेरे भविष्य पर क्या असर होगा इसका भी तुमने ख्याल किया, विमल ?

जानता हूं, मंजु। कुछ बुरा नहीं होगा। अधिक उज्वल भविष्य की ओर तुम्हारी गति होगी। तुम्हारे लिए सुख निश्चित है।

'पुरुष हो इसलिए ऐसा सोच सकते हो। समाज के नियम तुम्हारे रक्षक है। मेरे लिये रास्ते चलते आदमी को मनमानी कहने का अधिकार हो जाएगा विमल। लोग क्या क्या कहेंगे, क्या क्या सोचेंगे यह तुम नहीं सोच सकते। वर्षों के निश्चय को तुमने एकाएक कैसे बदल दिया ?

तुम्हें आफत से बचाने के लिये। साथ ही एक सूखी हँसी उसके मुंह से निकल गई।

गलत। मेरी इज्जत लेने के लिए। उसकी वाणी और चेहरे पर रोष छा गया। जैसे विमल आहत हो गया हो वह बोला—

आगे मत बढ़ो मंजु। तुम नहीं समझती कि किस मुश्किल से मैंने तुम्हें अब तक बचाया है। तुम उन रातों को भूल गई जब सिवाय मेरे तुम किसी के अधिकार में नहीं थी। तुम्हें अपनी कौमार्य रक्षा की चिंता ही कब थी मंजु ? शरद पूर्णिमा के वे सुख-स्वप्न याद करो जब समुद्र की उठती हुई लहरों ने तुम्हें पागल बना दिया था। खिली हुई चांदनी में तुम मेरे लिये कितना बड़ा प्रलोभन थी ! तुम्हारी समर्पण की इच्छा का, मैंने त्याग और आदर्श की वेदी दी। याद करो मंजु। अपने आवेश में तुम किन अचलों का किनारों का स्पर्श नहीं कर रही थी ? यह मेरा ही मान थी कि मैं तुम्हें बचा पाया मंजु। किन्तु यह सब त्याग मैंने किसी और के लिये नहीं किया था यह भी तुम्हें समझना चाहिये। और यह कहता हुआ वह फिर गंभीर हो गया।

विमल की स्पष्टवादिता के आगे मंजु की तर्क-बुद्धि ने काम न किया। उसके मुंह से शब्द निकला—

विमल !

किन्तु विमल अपने भावावेग मे कहता गया—

'याद है ! उस समय मने क्या कहा था ? 'हम अधिकार नहीं है। आज भी हम अधिकार नहीं है मजु। न जाने और भी कब तक हम ठहरना पडे !'

मजु का सर झुक गया। उसे अपने कटु शब्दो पर अफसोस था विमल ने उसे इस तरह देख कर कहा—

सामने देखो। गर विश्वास है तो प्रतीक्षा करनी होगी। ईश्वर सबकी मदद करता है। आखिर हम जरूर मिलेंगे।'

मजु ने विमल की आखो मे देखा। कुछ क्षण के लिए उसने अपना सर उसके सीने पर रख दिया। उलहना बहस, वार्ता सब खत्म हो गये।

इसके बाद वे दोनो उठ बैठे और मठ की ओर चल दिये।

९

मजु अपने घर चला गई। विमल मठ में आ गया। उस मठ में आए ज्यादा समय नहीं बीता था कि उसे मठ के किसी कर्मचारी ने मालूम हुआ कि अधिकारीजी उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। पूछने पर उसे यह भी मालूम हुआ कि वे उसी की कोठरी में हैं। मालूम होते ही वह अपनी कोठरी की ओर चल दिया। जिस समय विमल अपनी कोठरी में पहुंचा अधिकारीजी ध्यानावस्थित बैठे थे। उसने उनके पैर छुए और नमस्कार किया। उन्होंने आँखें खोलते हुए कहा—

आ गए विमल ?

जी जवाब आया।

बाहर गए थे ?

जी हाँ।

मठ से बाहर कहाँ दूर ?

जी।

उसी लड़की से मिलने ?'

जी।

उसके घर गए थे ?

जी नहीं। वह खुद आई थी।

अधिकारीजी को विमल के मुंह से असत्य निकलने की आशा नहीं था इसलिए वे कुछ भी चकित न हुए। भावों और विचारों की उथल-पुथल में वे उलझ गए। गम्भीरता का साम्राज्य थोड़ी देर के लिए कमरे में छा गई। उसे भङ्ग करते हुए उन्होंने कहा—

मठ के नियम बहुत कडे है, विमल ।

मैं उन्हें नही निभा सकूगा, गुरुदेव ।'

विमल के उत्तर को सुन कर अधिकारीजी के चेहरे पर एक आश्चर्यमयी मुदना छा गई और उनसे आगे एक बार प्रश्न करते न बना। प्रश्न और उत्तर दोनो मे एक लम्बे और गहन निर्णय की तीव्रता थी। दोनो इस तथ्य को तथ्य के इस सत्य का खूब समझते थे।

पूरे बाम वर्ष की सचित आशा विमल का यह उत्तर सुन कर अधिकारीजी के लिए एक अधकारमय निराशा मे बदल गई और वे भावपूर्ण दृष्टि से विमल की तरफ देखने लगे। विमल का सर झुक गया। वह उस अर्थपूर्ण दृष्टि का सामना नही कर सकता था। अपनी कमजोरी के लिए वह लज्जित था। थोडा देर की ग्लानि के बाद अधिकारीजी ने फिर प्रश्न किया—

तुमने क्या सोचा है आखिर ?

मैं यहाँ से चला जाऊगा गुरुदेव। मठ को बदनाम न करूगा। जवाब आया। सुन कर उनकी स्थिति दयनीय सी हो गई। विमल के निश्चय का आभास, उसके चिन्तन की गहराई उनके सामने स्पष्ट हो रही थी। अपने प्रश्नो के प्रवाह का पहलू बदलते हुए वे बोले।

जानते हो तुम्हारे लिये कितनी तकलीफें उठाई हैं ?

उनके लिये मै आपका आभारी हू, गुरुदेव।

तुम्हे मठ का अधिकारी बनना है। त्याग और तपस्या के जीवन में तुम्हारी रुचि होनी चाहिये। इसके लिये तुम्हे मजु को भुलाना होगा।

'गुरुदेव विमल अधिकारी जी के कदमो मे बैठ गया और उसने उनके पाव पकड लिए।

'यह मेरी आज्ञा है।

इतने कठोर मत बनिए गुरुदेव।

विमल ने पाव छोडे नहीं।

दूसरा कोई उपाय नहीं विमल।

उनका स्वर भारी हो गया। उन्होंने अपनी दृष्टि विमल से हटा कर दूसरी ओर करली। उन्हें शायद भय था कि वे अपने पथ से विचलित न हो जाय। आज तक उन्होंने विमल की किसी माग को न ठुकराया था। यहां तक कि उसकी किसी इच्छा को भी उपेक्षा की दृष्टि से न देखा था। वे जानते थे कि अपनी ही आज्ञा के कुठाराघात से अपने हाथों विमल की आशाओं का आज वे खून कर रहे हैं। विमल उनके हृदय का एक हिस्सा था, अंग था। उसके दर्द से वे अनभिज्ञ नहीं हो सकते थे। कितनी पीड़ा महसूस करके उन्होंने विमल से अपनी बात आज कही थी वे ही जानते थे। विमल के उत्तर ने, उसके निवेदन ने आज उन्हें कितनी पीड़ा पहुंचाई थी। अकेले वे ही जानते थे उनके सिवाय अन्य उसका अनुमान भी नहीं लगा सकता था। अपने इस आन्तरिक युद्ध के कारण उनके शरीर में गर्मी आ गई। उसे ठंडा करने के लिए उनकी आंखों से कई बूंद आसू धारा बन कर बह गये। विमल के हृदय में इस आज्ञा की बड़ी जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई। उसने आवेश में कहा—

मनुष्य के कायम किए हुए आदर्शों पर आप ईश्वर प्रदत्त स्वाभाविक प्रेरणाओं की बलि करना चाहते हैं, गुरुदेव। साथ ही उसकी आंखों में आंसू भर आए।

'ईश्वर प्रदत्त प्रेरणा—?

हाँ गुरुदेव। हृदय में उठने वाले भाव ईश्वर की ही देन है। उनकी उपेक्षा करना उसका अपमान करना है। आदर्शों का श्रेय उनके स्वभावसिद्ध होने में है, अभावसिद्ध होने में नहीं। आप सिर्फ आशीर्वाद दीजिये जिससे मैं अपने कर्तव्य का पालन कर सकूं।

इतने में ही कोठरी के सब द्वार बड़े जोर से खड़ खड़ा कर खुल गये। बहुत जोर के धक्के लगे व आवाज हुई। बाहर बड़े जोर की आंधी चल रही थी। भीतर कोठरी में उसे घुसने से कोई न रोक सका। कपड़े पाथी, पन्ने सब उड़ चले। सब तितर बितर हो गया। अधिकारीजी खड़े हुए। उनके मुंह से निकले हुए शब्द विमल के कानों में पहुंचे। उन्होंने

१२

बीमारी दूर हो गई थी। मगर, उसकी कमजोरी बाकी थी। मंजु के लिये डॉक्टरों की सलाह थी कि वह कुछ अर्से के लिए किसी ऐसे स्थान में रहे जहां की हवा स्वच्छ हो। अपनी इकलौती पुत्री के लिए मंजु की माँ सब कुछ करने को तयार थी। उसे शादी की जल्दी थी मगर जिन्दगी से बढ़कर शादी का सवाल नहीं था। वह तुरन्त तैयार हो गई और अपनी राय मंजु के आगे भी जाहिर करदी। मंजु को निर्णय सवाल तबियत लगने का था। जाने में उसे कोई आपत्ति नहीं थी।

मंजु की माँ ने विमल से भी अनुरोध किया कि वह भी उनके साथ चले। एक बार तो विमल बिलकुल इन्कार कर गया, मगर जब वह मंजु से मिला तो उसका विचार बदल गया। उस वक्त वह मंजु के घर में मौके पर आया था जब जाने की कुल तयारी पूरी हो चुकी थी। विमल के कमरे में प्रवेश करते ही मंजु ने कहा—

डाक्टरों की सलाह है कि मैं कुछ अर्से के लिये स्वच्छ हवा में रहूँ।

'यह मैं माताजी से सुन चुका हूँ।
तुम लोग आज ही जा रहे हो।'
आपको जाना मुबारिक हो
और आप ?
मैं तयार नहीं हूँ मंजु।
कारण ?'
'कारण कुछ नहीं।

आया और सामान ले गया और वे सब बाहर ग्राम के लिए रवाना हो गए।

उनका निर्दिष्ट स्थान कलकत्ता से बहुत दूर नहीं था। कुछ ही घण्टों की यात्रा के बाद वे अपने इच्छित स्थान पर पहुंच गए। ठहरने का इन्तजाम पहले से ही हो चुका था इसलिये उन्हें कोई परेशानी उठानी न पड़ी। वे स्टेशन से सीधे एक आदमी के साथ, जो उन्हें लिवाने आया था, अपने स्थान पर चले गए।

यह कस्बा देहात और शहर का मिश्रण था। आबादी के स्थानों में शहर की झलक आती थी और उनसे थोड़ी ही दूर नदी उस पार देहात का दृश्य था। शहर की अनेकों सहूलियतों को रखने के कारण शहरवासियों का यह जगह निपट देहात की तरह अखरती न थी। धनी आदमियों ने इसलिये स्टेशन से कुछ ही दूर पर कहीं कहीं अपनी अपनी कोठियां बनवा ली थीं ताकि शहर के जीवन से ऊबने पर यहां आकर कुछ दिन विश्राम ले लिया जाय। मजु वगैरह इसी किस्म की एक कोठी में आकर ठहर गये।

उनके दिन खूब मजे से कटने लगे। नदी के उस पार देहात से परे घने जंगल में कभी कभी वे बहुत दूर निकल जाते और स्वच्छन्दता से भ्रमण करते। उस प्रान्त में सुहावने कुंजों की कमी नहीं है। न पानी की ही। विमल और मजु ने अनेकों बार ऐसे ही घने कुंजों के बीच बैठ कर खाना खाया।

वे सुबह निकलते और नदी के किनारे सूर्योदय की प्रतीक्षा में बैठे रहते। बहती हुई सरिता अरुणोदय के समय जब अपना रंग बदलती, उनके हृदय उस सुन्दर दृश्य को देख कर खिल उठते। प्रकृति की यह सजीव नारी अपने प्रीतम के ध्यान की मुद्रा में नाचती कूदती, इठलाती गाती पाषाण चटकाती अपने लक्ष्य की ओर बढ़ी चली जा रही थी और जहां कहीं भी उसे प्रिय मिलन का मौका मिलता वह उसे अपने अंचल में ला बिठाती।

माझी क आने तक व प्रकृति क प्यार की इन हरकता को दखन और फिर उस पार चल जात । उस पार घना जगल था । उ ह मालुम हाता कि उ ह कोई बुला रहा है । व चल दत । प क्षया क गार म उन्ह सगीत का जादू मिलना और व बढ़े चल जात । विमल मजु का तग करन क लिए कभी कभी इधर उधर हा जाता और अपन माया का परवाना सा बना दता ।

इस तरह एक दूसर क सग म उनक दिन खुशी स बातन लग । उ ह किसी तीसरे साथी का जरूरत ही महसूस न हुई । दिन बात सप्ताह गुजर और अब महीन का आखिरी दिन भा समाप्त पर आ गया । व नदी पार होकर हमेशा की तरह जगल क रास्त हो लिए । वन क भातरी भाग क एक कु ज का उ हान अपना वहन का हक हासिल कर लिया था । व उसी कु ज क बीच आकर बठ गए और खा पीकर अपना थकावट मिटान लगे । एकाएक आज उ ह जगल म मगल सुनाई दिया । उ हाने सुना दूर जगल क अन्तरपट स मधुर स्वर लह री का प्रवाह जारी है । किसा न भरवी क मधुर स्वरा का छेड रखा था । प्रकृति क प्राकृतिक साना क स्वर इस स्वर्गीय सगात क आग एक बार म द पड गए । दूर स प्रवाहित यह स्वर-ल री थाड ही समय म जगल भर म छा गई ।

मजु और विमल अपन इस कु ज म आग आज तक पहले कभी न ी गए थे । कारण उन्हे माताजी का आज्ञानुसार वापिस लौटन म समय का ध्यान रखना पडता था । आज उनक दिल म स्वरा क जादू ने उत्साह पैदा कर दिया । उन्ह महसूस हुआ कि कोई उनका आह्वान कर रहा है । माताजी क आदेश न उनक दिला म उठन वाला उमगा का दबान म कोई सफलता प्राप्त न की । उ ्होंन कुछ एक क्षण तो इस स्वर्गीय आह्वान क प्रति उदासीनता दिखाई मगर जादू अपना असर करन पर तुला हुआ था । व म त्र मुग्ध की तरह निश्चिन्त सुनन लग । नारी का कोमल हृदय था । दर तक अपना लाभ सवरण न कर सका । उसक मु ह स शब्द निकल—

स्वर अधिक दूर म ता न्ही आ रहा है।
मन ना रहा है ?'
क्या न्ज है ? जन्दी ही वापिस लौट आएँगे।'

स्वरकार की कला म जीवन था। उसम उमने स्फुर्ति पैदा की। उसका सगान और तेज बढ़ने लगा। लय म द्रुतता आगई। उसका प्रभाव बढ़ गया।

व दोना उठ कर उसी ओर चल दिए जिधर स ध्वनि आ रही थी। ज्यो ज्यो सगीत का लय बढ़ती गइ उनके कदम भी ज्यादा तेजी से बढ़ने गए। जगल का रास्ता था। विमल एक दा बार उलझ गया और उमने विचार किया कि लक्ष्य को छोड दिया जाय। वह वापिस लौटने का तयार हुआ और अपने कदम उसने एक जगह रोक भी दिए। मगर मजु बराबर आगे बढ़ा जा रही थी। विमल का साथ पाकर अब तक वह काफी मजबूत हो चुकी थी। उसका लक्ष्य उस स्पष्ट दिखाई देता था। वह किसी तरह रुकना न चाहती थी। उस न विमल को सहारा देते हुए पुकारा—

अब हम आ पहुच है।'

स्वर लहरी का प्रवाह बराबर बढ़ता गया उसके साथ उसका प्रभाव भी। विमल न साहस करके अपने कदम मजु क साथ २ बढ़ा दिए। व एक ऊच टाल पर आए। अब उन्होने साथ खडे होकर देखा कि उनका लक्ष्य साफ था। कुजो के बीच सुन्दर भील थी, उसी म छिपा हुआ कोई अपनी मस्ती स जगत को भूमने पर मजबूर कर रहा था। प्रकृति उसका साथ द रही थी। सगीत की मधुरता अपनी पराकाष्टा का पहुच चुकी थी।

मजु और विमल भील पर आए। स्वच्छ नीर मे एक अलग ससार बसा हुआ था बा र स भी अधिक सुहावना। मजु और विमल भी भील क किनारे आने पर उस ससार म बस गए। उन्होने इधर उधर नजर दौड़ाई मगर कोई दिखाई नही दिया। स्वर प्रवाह पूर्ण तजी स बहा

वह दिन बीत गया। अगले दिन अरण्यालय से पहले जब विमल मंजु के कमरे पहुंचा तो वह बिस्तरे पर हो सो रही थी। विमल ने कमरे में एक क्षण के लिए इधर उधर देखा। उसकी दृष्टि जाग पड़ी पर पड़ा। उसने उसके इस हद तक कान एठे कि वह चीख उठी। मंजु की आंखें खुल गई। उसने देखा कि विमल उसकी ओर मुस्कराता हुआ देख रहा है। वह उठ कर बैठ गई और अपने अंगों को दबाने लगी मानो उनमें दर्द था। विमल ने मुस्कराते हुए पूछा—

आज किसी बहाने की खोज में हो, मंजु ?'

तुम तो बहाना ही समझोगे, विमल। देख नहीं रहे सारा शरीर टूट रहा है। तुमने मुझे बेहद थका मारा।

मास्टर बिचारा इन्तजार करेगा। बहुत देर हो गई है।

तुम जा जाओगे।

अकेला ?

और कहा ना क्या ?'

पार जाकर वापिस हो लोगे मंजु ?

ना लिए पार। मेरे से हिला ही नहीं जाता।

इस तरह कमजोरी दिखाने वाले हो लिए अच्छे। फिजूल बना आए। मेरे को देखा। तुम्हारे से ज्यादा महनत की है मगर कुछ नहीं तुम भी तो साथ थी। तुमने तो देखा है।

तुम मजबूत हो विमल इसलिए परवाह नहीं करते। मैं तुम्हारा साथ नहीं निभा सकता। यह कहकर वह कमरे के बाहर आ गई— आज

का नि भी ता अच्छा न ी ह । आंधी आग, वर्षा ने बिजली गर ।
न जान क्या हो । तुम्हे भी न जाना चाहिए । यदि कुछ ऐसी ही बात
गई तो याद है जगल ! पनाह तक न पाआगे । तज धारा म उस वक्त
तुम्हारे माझी की कुशलता काम न आगी ।

इतने म ही नौकर चाय क बतन लकर उपस्थित हुआ । मजु
जब चाय के प्याल तयार करने लगी तो तज वाष्प स उसका हाथ जलन
लगा । उसने झट म बतन को नीचे रखा । मट्टी का बतन टक्कर न सह
सका और टुकडे टुकडे हो गया । मजु ने मुस्कराते हुए कहा—

इतना ही मेरो पूर का भाग नहीं है ।

मामूली तौर पर प्याल तयार हो गए थे समलिए उन्होने
उठा कर पीना शुरू किया । थोडी दर बाद बिमल नदी की ओर चला
गया और मजु कोठी क पीछे के बाग म ।

मजु के सामने अनेक सुगंधित पुष्पो का ढर सा लगा हुआ था ।
वह जमीन पर बैठी अपनी पसन्द क अनुसार उन फूलो म माला बना रही
थी । थोडी देर बाद उसे परिचित स स्वर सुनाई दिये । उस याद
आया कि नजदीक आते ए सुनाई पडे मगर उस कुई दिखाई न ी
दिया । कोई तारो की मस्ती म छेडर ा था मगर उनम क्रम बद्ध प्रवा
जारी न था । मजु स न रहा गया । वह उठ कर घन कुजो की ओर
चल दी । सडक स दूर कोठी की सीमा क पास घन वृक्षो क बीच ा
जीवधारी बठ अपनी हरकतो म उन स्वरो को पैदा कर रह थ । युवक
अपने साज पर पहले उन स्वरो को पैदा कर रह थे । युवक अपन साज
पर पहल उन स्वरो को जगाता और फिर वस ही किशोरी अपन गल स
उस हरकत को दोहराती । शायद किशोरी को शिक्षा दी जा रही थी ।
अपनी कोठी क तारो को दीवार क पास जाकर मजु खडी हो गई और
उसन उनको अपना काम करते हुए देखा । थोडी देर म किशोरी की
मजु के आन का भान हुआ सा व खडी हो गई । युवक भी पीछा गा

गया और उसने सलाम किया। मजु ने पूछा--

तुम लोग क्या काम करते हो ?

गाने बजाने का ही काम करते हैं। जवाब आया।

रहते कहाँ हो ?'

नदी के उस पार हमारा डेरा है।' किशोरी ने जवाब दिया।

झील के पास ?'

हम लोगों का डेरा एक जगह हमेशा नहीं रहता माजी। हम लोग घूमते फिरते रहते हैं कल हमारा डेरा जरूर वहीं था', युवक ने जवाब दिया।

कल भी वहां यही बजा रहे थे ?'

'जी। सीखने से पहले रानी हर चीज को पसन्द करती है, इसीलिए इसे सुना रहा था। आज सिखा रहा हूँ।

बहुत सुन्दर स्वर है। रानी को पसन्द है ?

पसन्द किए बिना मैं बिलकुल नहीं सीखती।

कुछ याद हुआ ?'

अभी तो शुरू ही किया है।'

सब कुछ याद है। आप सुनियेगा ?'

यदि तकलीफ न हो।'

'शुरू करो, रानी। बड़े भाग्य हमारे जो आप सुनने को आईं।'

युवक ने तारों को छेड़ा और उनमें से मधुर स्वर निकले। किशोरी की जादू भरी आवाज ने उनका पीछा किया और फिर वे दोनों एक होकर मस्ती बरसाने लगे। स्वर लहरों के जादू ने मजु को मस्ती में मगन कर दिया और वह अपने आप का स्वर्गीय स्वप्नों की याद में कुछ समय के लिए खो बैठी। गाना समाप्त हुआ मगर उसका असर समाप्ति के बाद तक मजु पर छाया रहा। युवक ने पूछा--

'पसन्द आया माँजी ?

जवाब में मजु ने पाँच रुपये का एक नोट जमीन पर गिरा

दिया और वे शान्त भाव से वहाँ से चल दी। नानाविधान मंजु का ध्य
हरचन्द का ध्यान रह गये।

कानों का रास्ता लम्बा और घना था। वह नानडम्बा के साथ
हो ली। प्रकृति की छाया के विभिन्न रूप नानाविधाना के सगार से मंजु
को पुचकारा न दिया गर। वह मन्त्र मुग्ध की तरह अपने कदम बढ़ाती
पथ के सहारे-सहारे कानों की ओर अग्रसर हो रही। मन्द मन्द उसके
कदम एकाएक रुक गये। किसी की आवाज ने उसे रुकने पर मजबूर कर
दिया। उसे सुनाई दिया--

अभी बहुत कुछ देखना बाकी है कुमारी!

उसने घूम कर देखा तो मालूम हुआ कि एक पुरुष उसी रास्ते
उसके पीछे-पीछे आ रहा है। वृद्धावस्था में भी आगन्तुक के कदम बड़ी
तेजी से उसकी ओर बढ़ रहे थे। मंजु ने उन्हें देखा और पहचान लिया।
अब वह किसी के भ्रम में न थी। आगन्तुक ने गम्भीर भाव से पूछा--

मुझे पहचानती हो कुमारी?

आपको कौन नहीं पहचानता अधिकारीजी? मंजु ने शान्त
भाव से जवाब दिया।

मैंने सुना है विमल तुम्हारे साथ है?

जी। आपने ठीक सुना है।'

जानती हो मैंने उसे पुत्र की तरह पाल कर बड़ा किया है?'

जी।

'मगर इसलिये नहीं कि आखिरी जीवन में उसके हाथों मेरी
संचित आशाओं का खून हो।

यह आप क्या कहते हैं, अधिकारीजी?

मेरी प्रार्थना सुनने का हक अब सिवाय तुम्हारे और किसी को
हासिल नहीं है कुमारी!'

आप क्या कह रहे हैं, अधिकारीजी? मुझे आज्ञा दीजिये। आप
मेरे पूज्य हैं।

मैं भिक्षा माँगने आया हूँ कुमारी। मेरी वह माँग सिर्फ तुम ही
पूरा कर सकती हो। परन्तु अपनी माँग पेश करने के पहले मैं तुम्हारा

वचन चाहता हूँ कि तुम इंकार न करोगी ।'

'एसी क्या माँग है, अधिकारीजी ?'

'पहले वचन दो बेटी ।'

'ऐसा नही हो सकता अधिकारीजी । बगैर सुने मैं कोई वादा नही कर सकती ।'

'सुनने के बाद शायद मुझे निराश लौटना पड़े ।'

वैसा नहीं होगा, अधिकारीजी । आप सिर्फ अपनी सीमा में रहें ।'

अपने बीच सीमा का सवाल नहीं रह सकता बेटी ।'

फिर ऐसी आज्ञा न दीजिये अधिकारीजी ! अपने हक को हासिल करने के लिये दूसरो के हक को छीनना कहीं भी न्यायसङ्गत नहीं है ।

'जानती हो मैंने विमल को आदमी बनाया है ?'

इसके लिये वह आपका आभारी है ।'

मठ के उसके ऊपर अनेकों एहसान हैं ।

वह उन एहसानों को मानता है ।

'उसका भी तो कुछ कर्तव्य है जिसे उसे पालन करना चाहिये ?

जरूर ।'

तुम इसमें सहमत हो, कुमारी ?'

हाँ अधिकारीजी ।

तुम्हारा साथ रहते वह अपने कर्तव्य को नहीं निभा सकता ।

अपनी सीमा में रहें अधिकारीजी । अपने अधिकार की रक्षा के लिए आप दूसरों के अधिकारों की बलि देना चाहते हैं ?

मेरा अधिकार पहले है कुमारी ।'

'आपको इतना निर्दयी न होना चाहिए अधिकारीजी । बलि के लिए पशु आपने नहीं पाला था । आपने एहसान किए हैं । मनुष्यता की दृष्टि में एहसानों की कीमत जिन्दगी नहीं हो सकती अधिकारीजी ।

क्या मतलब ?'

विमल के ऊपर आपने अहसान इसलिए नहीं किए कि उनका बदला आप एक दिन इस आखिरी हद तक चुक । विमल की जिन्दगी अब केवल उसी की जिन्दगी नहीं रही है अधिकारीजी। उसके सहार-एक ऐसे जीवन की आशाओं का संसार भी आश्रित है जिस पर आपने कोई एहसान नहीं किए । इतने पर भी आप अपने एहसानों की कीमत लगे ?

एक क्षण के लिए अधिकारीजी को महसूस हुआ कि उनके विचारों में कमजोरी है । उनसे मजु के प्रश्न का उत्तर एकाएक देते न बना । मजु के स्पष्ट विचारों के आगे उनकी तर्कशक्ति ने काम न दिया । वे मजु के गंभीर मुखमण्डल की ओर एक टक देखने लगे । उसकी आंखों में तेज था और उसके भावों में गहराई । थोड़ी देर की शांति के बाद अधिकारीजी के मुंह से अधिकारपूर्ण शब्द निकले--

मेरी आज्ञा के विरुद्ध विमल को मेरा तुम्हें हासिल नहीं हो सकता था कुमारी !

यह मैं जानता हूं अधिकारीजी ।

वह एक महान पुरुष होने के लायक है ।

यह सब आपकी बदौलत ।

किन्तु, उसकी महानता को तुम अपने स्वार्थ की भेंट चढ़ाना चाहती हो ?

क्षमा करें अधिकारीजी ।

तुम्हारा समग्र रहते एक मामूली गृहस्थी के सिवाय वह और कुछ भी नहीं बन सकता ।'

यह तो अपनी अपनी किस्मत है अधिकारीजी ।'

विमल के भविष्य को अपने स्वार्थ की भाषा में न परखो कुमारी ! वह एक महान पुरुष होने के लायक है। सिर्फ तुमने उसके क्षेत्र को अपने तक सीमित कर रखा है ।'

आप स्पष्ट नहीं हैं, अधिकारीजी ।

तुमसे सम्बन्ध बनाने के पहले विमल के भविष्य में मान ऐश्वय

अधिकार सब सुरक्षित थे। तुम्हारा समय उसे इन सबमें महरूम कर देगा। महान मठ का भावी नायक एक मामूली सांसारिक बन जाय इसमें आदर्श आत्मा की क्या शान रही, कुमारी ? तुम्हारे प्रेमी की शान तो उसे उन्नत बनाने में होनी चाहिए और यह तभी हो सकता है जब अपने अधिकार में तुम उसे मुक्त कर दो।

अधिकारीजी ?

हाँ, कुमारी। तुम उससे प्रेम करती हो। तुम्हें प्रेम की कीमत भी चुकानी चाहिए। प्रेम की असली कीमत सुख नहीं, त्याग है। वास्तव में अगर तुम उससे प्रेम करती हो तो उस प्रेम की कीमत भी तुम्हें चुकानी होगी। विमल को महान बनाने के लिए तुम्हें उससे जुदा होना होगा। अपने प्रति विमल के हृदय में घृणा उत्पन्न करनी होगी जिसमें आयन्दा भी वह वासना का शिकार न बने।

मजु ने अधिकारीजी के तर्क को गंभीरता पूर्वक सुना। वह कुछ क्षण के लिए मूर्तिवत स्थिर रह गई। आदर्श की अप्राकृतिक कल्पना के आगे की हृदय प्राकृतिक सृष्टि को झुकना पड़ा। उसे विमल के जीवन की अतीत घटनाओं का एक बार फिर स्मरण हो आया। अधिकारीजी मजु के भावों की भाषा को पढ़ने में व्यस्त थे। मजु ने झुँझला कर एक बार फिर प्रतिवाद करने की कोशिश की। उसने कहा—

कल्पित आदर्श की रक्षा के लिए आप नारीत्व की शान लेना चाहते हैं अधिकारीजी। विमल समय पाकर एक महान पुरुष हो जायगा मगर यह कहना रह जायगा कि मनुष्य को नारी पर विश्वास नहीं करना चाहिए। नारी के हाथों आप नारीत्व की इज्जत लेना चाहते हैं ? मनुष्य के अपूर्ण आदर्श की वेदी पर नारी के अटल विश्वास का बलि ? यही तो आखिर आपकी माँग रही अधिकारीजी ?'

एक नारी को ही इतना बड़ा त्याग करने का हक हासिल है कुमारी। त्याग कभी छिपा नहीं रहता। प्रकट होने पर नारी की शान को इसने हमेशा बढ़ाया ही है।

यह नहीं होगा अधिकारीजी। विमल की महानता मेरे और आपके हाथ में नहीं है। यह तो अदृष्ट के हाथ की बात है जिस पर मनुष्य का कोई काबू नहीं।

प्रेम की कीमत देने में इतना आगे पीछे देखती हो कुमारी? तुम्हारा प्रेमी तुम्हारे त्याग की बदौलत यदि एक महान संस्था का नायक बने तो इसमें तुम अपनी शान नहीं समझती? मैं तो अधिकारी तुम से कामना रहित प्रेम की मांग करता हूँ। विमल के तुम्हारे से दूर हो जाने के बाद भी तो तुम उसकी शुभ कामना कर सकती हो देवी!

अधिकारीजी?'

मैं वचन चाहता हूँ कुमारी। औरत से विमल को घृणा करने में यदि तुमने सफलता प्राप्त की तो उसकी आखिरी कमजोरी भी दूर हो जायगी। मैं नारी के त्याग पर विश्वास कर सकता हूँ कुमारी? जवाब दो। पारस्परिक संवादों के बीच जो भी गहन शांति के क्षण गुजरते उनमें एक दूसरे को एक दूसरे की गंभीर स्थिति का कुछ आभास मिल जाता था। कुछ क्षण विराम कर बोला—

हाँ अधिकारीजी। मंजु का स्वर भारी था। उसकी आँख आँसुओं से डबडबा आई थी। अधिकारीजी ने अब और ठहरना उचित न

१४

मजु की सचित आशाओं का समार कल्पित आदर्श की वेदी पर इस तरह हत हो गया। उसी आदर्श के लिए उसे अब अपने प्रति विमल के विश्वास की बलि देनी थी। वह अपने कमरे में आकर उसका उपाय सोचने लगी। अपने प्रति विमल के हृदय में अविश्वास पैदा करना अब उसका काम था यह किस तरह से हो सकता है ? यही समस्या उसके सामने अब नाच थी। एकाएक प्रसंग में, सब कुछ कह देने से उद्देश्य सिद्धि में रुकावट पड़ने होने का डर था। वह नत मस्तक होकर मेज के सहारे बैठ गई और अपनी उलझन सुलझाने के उपायों की कल्पना करने लगी। बड़ी देर तक मस्तक बैठे रहने के बाद उसने अपना सर ऊंचा किया। आंखों में आंसू थे। चेहरा गम्भीर था। दृढ़ता के स्थायी भाव उस पर अंकित थे। उसने चिट्ठी लिखने का एक सुन्दर कागज उठाया और उस पर लिखना शुरू किया।

प्रियतम !

विमल निर्दोष है उससे तुम्हें स्पर्धा न होनी चाहिए। वह तो दया का पात्र है। तुम्हारी मजूरी से ही मैंने उसे अपने पास रख छोड़ा है। तुम्हारे अधिकार को वह नहीं पा सकता। अपने बीच वह किसी तरह बाधा नहीं पहुंचा सकता। प्रथम तो माताजी ही उसके लिए आज्ञा नहीं देंगी। दूसरे वह कोई ऐसा जिम्मेवार आदमी नहीं जिसके ऊपर कोई आशा लगाई जा सके। स्पर्धा भी करते तो किसी बराबर वाले से तो करते। विमल पैसे पैसे के लिए मोहताज है। मैं उसकी, किस आशा को लेकर हो जाऊँगी ? तुम्हारी कल्पना बिल्कुल गलत है। उसे कृपया सुधार लेना। बाकी सब कुशल है।

पत्र पढ़ कर बराबर नष्ट करते रहिये ऐसा विश्वास करती हूँ।

सदा तुम्हारी—

मंजु

मंजु ने उपर्युक्त पत्र लिख कर उसे अच्छी तरह समेटा और मेज के मुख्य स्थान पर एक भार के नीचे रख दिया। नहाना बहुत पहले ही वह कर चुकी थी। भावी घटनाओं की प्रतीक्षा में वह समय बिताने लगा। जब उसे मालूम हुआ कि विमल बाहर से आ गया है वह उठ कर अपने कमरे के बाहर चल दी। वह चाहती थी कि विमल किसी तरह उस पत्र को पढ़ ले।

विमल बाहर से आते ही यन्त्रवत् पहले मंजु के कमरे में गया। मंजु वहां न थी। वह मंजु की मेज के शीशे में अपना चेहरा देखने लगा। उसके बाल बिखरे हुए थे और वस्त्र कुछ भीगे हुए। उसने अपना कोट उतार कर खूंटी पर रख दिया और मेज पर से कंघा उठा कर अपने बाल संवारने लगा। इसी बीच उसकी दृष्टि मेज पर पड़े हुए पत्र की तरफ खिंच गई। वह उसे उठा कर पढ़ने लगा। उसने एक बार सारा पत्र शुरू से लेकर अन्त तक अक्षरशः पढ़ डाला। विमल का चेहरा सफेद हो गया। उसके हाथ कंपित हो उठे। पांव धरती में चिपक गए। सारे शरीर की शक्ति एक छिन में छिन गई। वह उस पत्र को ज्यादा देर तक अपने हाथ में न थाम सका। पत्र क्या था वज्र था। उसमें लिखे हुए शब्द विषैले बाणों से भी ज्यादा घातक थे। वे अपना काम कर चुके थे। विमल को पसीना उतर आया। उसके पांवों की जमीन खिसकने लगी। उसने इधर उधर देखा। उसका कोई सहायक नहीं था। उसे गुरुदेव की याद हो आई। उसने शून्य में एकटक देखते हुए कहा—

आपने सच कहा था गुरुदेव। सबकुछ धोखा है।

उसने एक बार फिर पत्र को उठाने की चेष्टा की। उसके हाथ उसे स्पर्श करने ही वाले थे कि मंजु ने कमरे में प्रवेश किया। उसने सरल शब्दों में कहा—

आज बहुत देरी कर दी, विमल !'

हा ।' इसके आगे विमल की जबान न खुली ।

अब तक मजु मेज के पास आ चुकी थी । उसने आते ही खुले हुए पत्र को उठा कर झट से समेट लिया ।

विमल ने शान्त भाव से कहा—

मैं इसे पढ चुका हूँ । उसकी दृष्टि दूसरी ओर थी ।

मेरे व्यक्तिगत मामले मे हस्तक्षेप करने का तुम्हे अधिकार नही है विमल । मजु ने रुख बदलते हुए कहा ।

मैं समझता था 'है, इसीलिए पढ लिया । उसी शान्त भाव से विमल ने जवाब दिया ।

पहले अधिकार पाने के योग्य बनते विमल पीछे आशाएँ बाधना था । मजु एक रईस की लडकी है । उसे अपना बनाने के लिए तुम्हे अपनी हैसियत सुधारनी चाहिये थी ।

और वह हैसियत दौलत ही है ?'

जरूर ! समाज मे दौलत का अपना एक विशिष्ट स्थान है । वही तुम्हारे पास नही है । दूसरो के स र जिन्दगी बसर करने वाला मेरा अधिकारी नही हो सकता । विमल यह तो तुम्हें बहुत पहले ही मालूम हो जाना चाहिये था ।

तुम्हें दौलत ही मिलेगी, मजु । और किसी चीज के तुम योग्य भी नहीं हो ।

'अपनी सीमा से बाहर न जाओ विमल । मैं उसे अपने से बात करने के लायक भी नही समझता जिसके पास पैसा न हो । बिना हैसियत की दोस्ती म भी मुझे शक है ।

मजु का आखिरी वाक्य पूरा भी न होने पाया था कि विमल दरवाजे की ओर बढ गया । उसने एक बार खूटी की तरफ अपना हाथ बढाया मगर उसकी हिम्मत अपने उतारे हुए कोट को उठाने की न हुई । शायद, वह उसका खुद का खरीद किया हुआ न था । वह गीले वस्त्रो ही

इसके बाद विमल किसी तरह वापिस कलकत्ता आ गया। इतने बड़े शहर में सिवाय मठ के उसका कोई अन्य सहारा न था। सड़कों पर लगे पानी के नलों पर बार-बार पानी पीकर उसने अपनी क्षुधा शान्त करनी चाही, मगर ऐसा करके वह अपने आपको धोखा दे रहा था। इस तरह बेराज मठ में पहुँचने उसे शर्म मालूम होती थी। किसी तरह संध्या का समय उसने नजदीक लिया। बहुत कुछ इधर उधर के विचार के बाद वह मठ की ओर हो चल दिया। उसके पाँव बड़ी तेजी से उठने लगे। धीरे धीरे मठ दृष्टिगोचर हुआ और उसके बाद वह उसके समीप भी पहुँच गया। उसके पाँव रुक गए। एकाएक उसको मठ में प्रवेश करने की हिम्मत न हुई। वर्षों का अपना घर उसे पराए घर की तरह जान पड़ा। वह जानता था कि सिवाय मठ के उसका कहीं दूसरी जगह आश्रय नहीं है मगर फिर भी वह अन्दर एकाएक दाखिल न हुआ। वह चाहता था कि कोई सहारा देकर उसे प्रवेश कराये। अनुरोध या भिन्नता जो कुछ भी हो वह एक बार मठ के बाहर ही उसका सामना करना चाहता था।

आखिर, उसकी साध पूरी हुई। इधर उधर चक्कर काटता-काटता वह मठ के दरबान द्वारा देख लिया गया। दरबान उसे देखते ही उसके पास आया और नमस्कार किया। विमल ने कहा—

अच्छे तो हो बक्शी?

जी अधिकारीजी कई दफा आपके लिए पूछ चुके हैं। इन दिनों तो वे आपकी तलाश में बहुत ज्यादा हैं।

विमल की हिम्मत बढ़ गई। दरबान की बातों ने उनमें फिर से नए साहस का संचार कर दिया। वह बोला—

तुम उन्हें सूचना दे दो कि मैं आ गया हूँ।

यह कह के विमल मठ के दरवाजे की ओर बढ़ा और जल्दी से अन्दर प्रवेश करके अपनी कोठरी की ओर कदम बढ़ा दिए। उधर बन्दा अधिकारीजी के निवास-स्थान की ओर चल दिया।

विमल ने कोठरी के पास जाकर देखा तो उसकी हिम्मत एकदम प्रवेश करने की न हुई। उसे इस दशा हुए तो पूरे एक महीने से भी ज्यादा हो गया था फिर भी वह इस हद तक साफ सुथरी बनी था— बना था। यही उसके मन की उलझन थी। उसे एक बार लगा कि शायद किसी दूसरे आश्रमवासी ने इस पर अपना कब्जा जमा लिया हो। वह कुछ क्षण के लिए बाहर हुआ हो अन्दर की चीजों को गौर से देखने लगा। सब उसी की थी। उसका शक कुछ अंशों में कम हो गया और वह अन्दर प्रवेश कर गया। थोड़ी देर में मठ के एक नौकर ने स्नान के लिए पानी लाकर रख दिया और उसके बाद ही एक आदमी भोजन की थाली लेकर आ गया। विमल को घटनाओं के क्रम से बात समझ में आने लगी। इस समय तो वह इतना ही ख्याल कर सका कि यह सब अधिकारीजी की कृपा का फल है। जब विमल खाना खा रहा था मठ के एक कर्मचारी ने खुशामद करते हुए कहा—

आपकी गैरहाजिरी में अधिकारीजी सब पर नाराज रहते थे।

अब तो खुश हैं?

जरूर होंगे।

क्या बात हुई थी?

आपका किसी को कुछ ख्याल न था इसलिये।

क्या मतलब?

अधिकारीजी ने दरबान से आपके आने जाने के लिए पूछा। उसने कहा पता नहीं है। रसोइया महाराज से खाने की बाबत पूछा तो

उसने भी पता नहीं है ध्यान दिया। मठ का कोई कर्मचारी आपके विषय में ठीक जवाब न दे सका। अधिकारीजी नाराज हो गए। उन्होंने कहा—तुम सबको अपना अपना ध्यान है मठ की जान की तुम किसी को कुछ परवाह नहीं। तब मैं बराबर सब अपना अपना ध्यान रखते हैं।

विमल ने मुस्करा कर बात को वहीं बन्द कर दिया।

थोड़ी देर में विमल ने खाना समाप्त कर लिया और वह अपनी कोठरी में बैठा एक पुस्तक पढ़ने लगा। पुस्तक पढ़ने की तो सिर्फ चेष्टा मात्र थी। उसका ध्यान पिछले दिन की घटनाओं में चला गया। नारी के विश्वासघात के सिवाय इस समय वह कुछ भी नहीं सोच सकता था। मनुष्य की आराधना की देवी में राक्षसी प्रवृत्तियों की इस सीमा तक समाविष्टि है यही उसको अफसोस था। मंजु के विश्वासघात के कारण उसे नारीत्व से घृणा हो गई और वह अपने किए पर पछताने लगा।

कोठरी का द्वार खुला। विमल ने देखा कि अधिकारीजी हैं। वह सम्मान में खड़ा हो गया और उसने नमस्कार किया।

'तुम से सलाह करनी थी विमल!'

विमल का सर नीचा हो गया। उसके मुंह से शब्द न निकले।

अधिकारीजी ने कुर्सी पर बैठते हुए कहना शुरू किया—

'मुझे मालूम हुआ कि तुम बाहर चले गए थे।'

विमल ने अधिकारीजी के पांव पकड़ लिए और दीनता से कहना शुरू किया—

'अब नहीं जाऊँगा, गुरुदेव। आप क्षमा कीजिए।'

वह पांवों से लिपट सा गया। अधिकारीजी बोले—

कोई बात नहीं थी विमल! मुझे किसी ने कहा मठ में मठ के योग्य सजावट होनी चाहिए। मुझे तुम्हारा ख्याल आया। सोचता हूँ, यदि मठ में साधु महात्माओं के कुछ चित्र लगा दिए जाय तो अच्छा ही है। मुझे विश्वास है तुम मठ की इस कमी को पूरा कर सकोगे।

कोशिश करूंगा, गुरुदेव।

"मुझे विश्वास है कि तुम कर सकोगे। तुम्हें अपना काम जल्दी ही शुरू कर देना चाहिए। अपनी आवश्यकताओं के लिए तुम्हें सब कुछ शीघ्र ही जुटा लेना चाहिए।"

यह कह कर अधिकारीजी अपने निवास स्थान के लिए चल दिए। विमल उनके जाने के बाद कुछ देर तक अपनी आँखों से आँसुओं की धाराएं बहाता रहा। इन आँसुओं में जलन नहीं थी बल्कि शान्ति थी। अब भी संसार में उसके लिए कम से कम एक आत्मा तो ऐसी थी जिसे उसके भविष्य का ध्यान था। आँसुओं ने इन आँसुओं ने उसके दिल को एक बार हल्का कर दिया।

धीरे धीरे दिन गुजरे। विमल ने अधिकारीजी की आज्ञा के अनुसार अपना काम शुरू कर दिया। विमल की कोठरी एक बार फिर सुन्दर चित्रालय के रूप में बदल गई। अनेक त्यागी महात्माओं की रूप-रेखाएं अपूर्ण चित्रों में नजर आती थीं। बहुतों में सिर्फ आखिरी रंग ही देने बाकी थे। अधिकारीजी ने उन्हें देखा और उनका दिल खुशी से फूला न समाया।

एक दिन ऐसा भी आया जब विमल ने अपने चित्रालय में से उन चित्रों को बाहर निकालना शुरू किया। देखते-देखते मठ की सजावट शुरू हो गई। मठ का हर हिस्सा त्याग-तपस्या के जीवन से सजीव हो उठा। दर्शक को एक जगह जाने में कई बार श्रद्धा और भक्ति से नत मस्तक होना पड़ता था। मीरा की तन्मयता, चैतन्य की भक्ति, ध्रुव की तपस्या, प्रह्लाद का विश्वास, बुद्ध का त्याग, स्वामी राम का दर्शन, विवेकानन्द का विवेक सभी तो अपनी-अपनी जगह उन चित्रों में प्रदर्शित थे। अधिकारीजी ने उन सबको देखा और उनका मस्तक गौरव से ऊँचा हो गया।

एक दिन बिहारी के पिता मणिबाबू अधिकारीजी के दर्शन के लिए फिर मठ में आए। अधिकारीजी की बैठक तक पहुँचते पहुँचते उन्हें बहुत देर हो गई। वे जिस चित्र के पास भी पहुँचते उन्हें रुकना पड़ता।

बगैर नत मस्तक न्ए उनके कदम आगे बढ़े ही नहीं। जब वे अधिकारीजी के पास पहुँचे तो उन्होंने उत्सुकता से उनसे कहा—

बड़े अच्छे चित्र लगाए हैं आपने।

पसन्द हैं आपको ?'

मठ की शान हो गए हैं, अधिकारीजी।

आपकी सलाह थी उसी का यह फल है।

ये सब चित्र विमल ने बनाए हैं अधिकारीजी ?'

जरूर।'

'वह इन्हें बना सका ?

'आपको विश्वास नहीं होता ?

आप कह रहे हैं इसीलिए विश्वास तो करना ही पड़ेगा।

अधिकारीजी मणिबाबू का शक दूर करने के लिए उन्हें विमल के चित्रालय में लिवा ले गये। वहाँ विमल एक दूसरे ही चित्र की रूप रेखा खीच रहा था। उसमें कोई महात्मा न था बल्कि मनुष्य की जिन्दगी की एक झांकी थी जीवन की क्षणिकता अमरता का प्रदर्शन था। संसार पथ पर चलती हुई सुन्दर नारी अपनी आखिरी मंजिल चिता युक्त श्मशान की ओर ही अग्रसर हो रही थी जहां सिवाय अस्थि पंजर के किसी चीज का अस्तित्व न था, यही इस चित्र का भाव था।

अधिकारीजी व मणिबाबू ने इस चित्र को कुछ क्षण के लिए देखा और फिर वे एक दूसरे की तरफ देखने लगे। अधिकारीजी ने मन में कहा—

यह मठ के वातावरण की ही शान है मणिबाबू। और वे विमल के चित्रालय से बाहर होगए।

१६

मजु ने कलकत्ते वापिस आने के बाद एक दिन एक पत्र बिहारी को भेजा। पत्र में लिखा था—

बिहारी बाबू!

पूज्य माताजी ने जो प्रस्ताव आपके पिताजी के पास भेजा है उससे मैं सहमत हूँ। यदि आप अनुचित न समझें तो पूज्य पिताजी को अपना निश्चय जता सकते हैं। पुराने व्यवहार के लिये क्षमा चाहता हूँ।

आपका—

मजु

बिहारी ने मजु के इस पत्र को पढ़ा और उसके दिल में फिर नई आशा का संचार प्रवाहित हो गया। वह पोशाक बदल कर सीधा मठ की ओर चल दिया। मठ की ओर इसलिये कि बगैर विमल की मंजूरी हासिल किये वह कोई कदम अपने इस विवाह की ओर नहीं उठा सकता था। उसके दिल में आज सा[illegible]म था। अपने कब्जे के पत्र पर उसे पूरा विश्वास था। अपनी विजय इस सम्बन्ध के सहारे उसे निश्चित जान पड़ती थी। वह मठ में पहुँच कर सीधा विमल की कोठरी की ओर गया। वह भीतर से बन्द थी। उसने जोर से खटखटाना शुरू किया। विमल ने दरवाजा खोला तो देखा बिहारी है। आओ बिहारी। कह कर उसने उसे अन्दर ले लिया। बिहारी ने कोठरी की चटकनी फिर से लगा दी और वे दोनों आराम से बैठ गये।

बातचीत शुरू हुई। विमल ने पूछा—

किस तरह आये?

जवाब म बिहारी ने मजु का वही पत्र विमल के हाथ म द दिया।

विमल ने उस पत्र को एक बार पढा और वापिस उसी वक्त बिहारी की ओर पत्र कर लिया। पत्र बढ़ाते हुए उसने बिहारी से कहा—

मुबारिक हो।'

दिल से कहते हो ?

अवश्य।

वर्षों के निश्चय को तुमने एकाएक कैसे बदल दिया ?

यह अपना अपना भाग्य है बिहारी।

वह तुम्हारे योग्य नहीं थी ?

इन बातों से क्या फायदा बिहारी।'

म जानना चाहता हू विमल। मुझे उससे शादी करनी है।

म उसके योग्य नहीं था।

थोडी देर की खामोशी के बाद बिहारी ने अपनी विचार मुद्रा को भग करते हुए फिर पूछा—

एक जवान औरत यदि एक जवान पुरुष से प्रेम करे और उन दोनों को एकान्त म एक साथ समय बिताने का मौका मिले तो जहा तक मेरा ख्याल है वे अनधिकार चेष्टाओं के शिकार हुए बगैर न रहेगे। तुम्हारा इसमें क्या राय है ?

यह उनकी इन्सानियत पर निर्भर है, बिहारी।

मजु के लिये तुम्हारा क्या ख्याल है ?

मेरे लिये तुम क्या सोचते हो ?

तुम पवित्र हो विमल।'

मजु भी शरीर से पवित्र है।

और मन से ?

उसमे इन्सान धोखा खा सकता है बिहारी। क्योंकि कोई किसी की भीतरी तह तक नहीं पहुच सकता।'

थोडी देर की खामोशी के बाद कोठरी का दरवाजा खुला

और विमल और बिहारी दोनों बाहर निकले। विमल बिहारी को मठ के बाहरी फाटक तक छोड़ने गया और वहां से अपने दोस्त को विदा दी। बिहारी ने महसूस किया कि विमल के नज़दीक समय की इस सीमा पर हार जीत का सवाल ही न रहा था।

१७

इस घटना के कुछ ही दिन बाद बिहारी के पिता की तरफ से विमल के नाम एक कुकुम पत्रिका और बिहारी की तरफ से एक व्यक्तिगत पत्र मठ के पते से पहुंच। दोनो ही पत्रो म भेजने वालो ने अपनी अपनी तरफ स विमल से विवाह सस्कार के शुभ अवसर पर शामिल होने की प्राथना की थी। कहना नहीं होगा कि ये दोनो पत्र बिहारी-मजु की शादी से सम्बन्ध रखते थे।

विमल ने इन दोना पत्रो को पढा और लापरवाही से एक तरफ फेंक दिया। उसकी इस चेष्टा से यह अन्दाजा बखूबी लगाया जा सकता था कि उस उस विवाह म कोई दिलचस्पी नही है।

ठीक मुहूर्त म एक दिन बिहारी – मजु का विवाह सस्कार सम्पन्न हो गया। मगर विमल उसम शामिल न हुआ। वर और वधू दोनो पक्षो की तरफ स अनेक खुशिया मनाने के आयोजन किये गए। मगर वे सब मजु के लिए केवल प्रदर्शन मात्र रह गए अपना हृदय उनमे वह सयोजित न कर सकी।

सा ग रात्रि म सुसज्जित कमरे म पति-मिलन के लिए वधू को प्रवेश कराया गया। बडी सावधानी से मजु ने अपने कदम कमरे म बढाए। उस ठोकर खा जाने का डर था। अन्य सखिया के बाहर चले जाने के बाद पतिदेव कमरे म पधारे। अन्दर का चटखनी लगा कर जैसे ही बिहारी सुसज्जित पलग की ओर बढा, उसकी दृष्टि एक तरफ खडी हुई मजु पर पडी। उसने मुस्कराते हुए ज्योही अपने कदम रोक मजु उसके पावो से लिपट गई। बिहारी ने आग्रहपूर्वक उसे उठाया,

सहारा देकर पलग तक ले गया और अपने साथ बिठाया। मंजु अब भी नत मस्तक थी। बिहारी ने हाथ का सहारा देकर कहा—

सामने देखो।

मंजु ने सामने देखा। बिहारी ने कहा—

हसो। मंजु ने हस भी दिया मगर उसमे हसी नहीं था— हसने की चेष्टा मात्र था। उसके चेहरे के भाव गम्भीर थे। बिहारी ने समझ लिया कि उसकी मंजु उसकी आज्ञा के अनुसार हसी जरूर मगर वह एक कृत्रिम हसी ही पैदा कर सकी। उसने तेज रोशनी बन्द कर दी और अपनी अर्धांगिनी के आलिंगन मे रस लेने लगा।

मंजु बिल्कुल अकर्मण्य थी। उसकी देह सहारा पाकर राकेश के साथ बिहारी की ओर खिंच गई। बिहारी ने महसूस किया कि वह अभी तक मंजु के भावों को—उसकी सवेदनाओं को जागृत नहीं कर सका है। उसे स्पर्श से मालूम हुआ कि उसके प्रेम की आराध्य देवी अपने उष्ण आसुओं से शय्या को तर करने की फिक्र मे है। उसने उठकर फिर से रोशनी जलाई और देखा कि सचमुच उसका खयाल ठीक था। मंजु वास्तव मे आसू बहा कर अपने दिल को हल्का कर रही थी।

बिहारी ने पारस्परिक बात-चीत से इन आसुओं का कारण जानना चाहा। इस समय सिवाय इस तरीके के वह और किसी तरह भी मंजु के दिल की तह तक नहीं पहुच सकता था। उसने प्यार से पूछा—

खुशी के मौके पर आसुओं का क्या काम मंजु ?'

मगर मंजु के मुह से जवाब मे एक शब्द भी न निकला। उसने मंजु का नत मस्तक अपनी ओर उठाते हुए फिर पूछा—

कोई दुख है ?

जवाब मे मंजु ने अपना सर हिला दिया। शब्द अब भी उसके मुह से न निकले।

तुम्हे मजबूर तो नहीं होना पड़ा मंजु ?

मजु ने सर हिला कर नहीं में जवाब दिया। इस बार उसके मुह से शब्द भी निकला—नहीं।'

विमल ने तुम्हारे साथ धोखा किया ?' प्रश्न हुआ।

नहीं। जवाब आया।

'और किसी की याद आ रही है ?'

बीती हुई बातें आज कहानियां हो गईं। वे ही याद हो उठती हैं।

'उन्हे भूल जाओ, मजु।

आपको पाकर सबको भूल जाऊंगी। सिवाय आपके मेरे लिए अब कोई याद सुखकर न होनी चाहिए।'

यह कह कर मजु ने अपना सर बिहारी की गोद में दे दिया। बिहारी ने इस समय मजु के नाजुक हृदय को और किसी तरफ प्रेरित करना उचित न समझा। उसने बत्ती गुल कर दी और वे सो गए।

१८

सौहाग रात्रि के दिन मजु अपने बीते जीवन के संस्मरणों से बहुत कुछ छुटकारा पा चुकी थी। उसने अपने जीवन की मीठी कड़वी याद को अपने दिल से आँसुओं के जरिए बाहर निकालने का जो प्रयत्न किया उसमें उसे कुछ हद तक जरूर सफलता मिली। जीवन के मीठे स्वप्न एक बार अपने दर्द को खो से बैठे। पति परायणा मजु ने अपने पति बिहारी को कम से कम यह सोचने का मौका फिर कभी नहीं दिया कि उसका दिल सिवाय उसके और भी किसी की याद में उलझा हुआ है। वह पति की हर माग को पूरा करने की चेष्टा करती। सिनेमा थियेटर सरकस प्रदर्शिनी उत्सव आदि में बिहारी हमेशा मजु को अपने साथ रखता। उसे इस बात का गौरव था कि उसकी धर्मपत्नी सभ्यता के करीब करीब सब अंगों से परिचित है। मणिबाबू का कोष इस दम्पति की अपनी इच्छाओं की पूर्ति में पूरा सहायक था। मजु के दिन अपने पति के संग बड़े आनन्द से कटने लगे।

उधर विमल का अधिकारीजी ने एक ऐसा रास्ता पकड़वा दिया था कि सिवाय एक काम के उसको दूसरे कामों में बिलकुल फुरसत ही नहीं मिलती थी। वह अपनी चित्रकला की उपासना और सेवा में ही करीब-करीब संलग्न रहता था। मठ की माग पूरा हो जाने के बाद भी अधिकारीजी विमल को किसी नए भाव की खोज में अग्रसर कर देते। वह अपनी नई खोज में लग जाता। धीरे धीरे विमल के पास अपनी कला के नमूनों का एक अच्छा संग्रह हो गया।

× × ×

देग के कलाकारा की इज्जत करन क निए कलकत्ता की एक मगहूर सस्था न एक प्रर्गशिनी का आयोजन किया । देश क विभिन्न भागा से प्रर्गनी को सफल बनाने म सहायता देन की माग की गई । देग क कोन कोने म बसने वाले कलाकारा के नाम अपनी कला के नमूनो को ला कर प्रदान करने की अपील पेग की गई । सुदर कला क नमूना के लिए प्रर्गनी की काय कारिणी समिति ने पारितोषिक रख और इच्छुक कला कारो को अपनी मेहनत की सृष्टि को वेच कर पसा म परिवर्तित करा दे भी साधन समिति ने प्रदान किए ।

उक्त प्रर्गनी का मण्डप हमारे पूव परिचित मठ से ज्यादा फासले पर नही था । देश क प्रमुख कलाकारो के चित्र वहा प्रतिद्वन्द्विता म शामिल होने क लिए आए । जो कलाकार अपनी तस्वीर का वेचने का इच्छुक था उसके नमून पर बिक्री क लिए और उसकी कामत एव काने पर दज थे ।

अधिकारीजी के आदेश से विमल ने भी अपन सग्रह के कुछ चित्र प्रदर्शिनी म सजाये जाने के लिए भेजे । उन चित्रा म उसने एक चित्र नारी का भा भेजा जिसकी सुन्दरता, सत्यता के बाहर सिफ कल्पना क जगत म ही हो सकती थी । विमल ने इस चित्र को उक्त प्रदर्शिनी का इल्म हाने पर रात और दिन की लगातार मेहनत के बाद तयार किया था । सिफ इस चित्र के नीचे विमल ने अपना नाम न दिया । जितने चित्र उसन प्रर्गनी मे भजे उनम से कोइ भी बिक्री के लिय नहा था ।

प्रदर्शिनी म रखे हुए विमल के चित्रो का जनता ने देखा और मुक्त कण्ठ से उसकी तस्वीरा का सामालोचना म इसम कला है इसम जीवन है, 'यह भाव पूण है' आदि ऐसे ही वाक्य सुने गये ।

प्रदगन के तीसर रोज प्रात काल ही प्रर्गनी की समिति न विमल का नाम सव प्रथम पुरस्कार विजता की जगह घोषित कर दिया । उसक जिस चित्र ने उसक लिये यह पारितोषिक जीता वह एक नारी का चित्र था जिसका उल्लेख ऊपर आ चुका है ।

मजु हैरान थी। उसे पसीना उतर आया। वह अपने चित्र को नजर भर देख भी न सकी थी कि उसे वहा से हटना पडा। बिहारी ने मजु की परेशानी का पहचान लिया और वह उस अपने हाथ का सहारा देकर प्रदर्शनी के बाहर ले आया।

जब मजु अपनी मोटर गाडी म बठी, उसने अपन पति से कहा—

'उस चित्र का किसी तरह आप मेरे लिये हासिल कर सकने है ?

कोशिश करूँगा।' जवाब आया।

फिर कब कीजियगा ? प्रदर्शनी का आज आखिरी दिन है। कलाकारो का अपने नमूने आज ही वापिस द दिये जायेंगे।

बिक्री का डर तो है नही, मजु। इसे ता विमल से बाद म भी हासिल किया जा सकता है।

मेरी साधारण सी माग को भी आप ठुकरा रह हैं। आप जाते तो विमल आपको शायद दफ्तर म ही मिल जाता।

मजु की माग म गम्भीरता थी। बिहारी उसका सकेत पाकर सीधा समिति के कार्यालय म पहु चा। इधर-उधर देखन के बाद उसे विमल की शक्ल दिखाइ दी। अपन एक समय के दोस्त को हाथ से एक तरफ खीचते हुए बिहारी ने कहा—

पहले बधाई दू या माँग पश करूँ ?

'धन्यवाद, विमल न मुस्कराते हुए जवाब म कहा।

'तुम्हारी भाभी की माग लेकर हाजिर हुआ हूँ।

'मैं समझ गया। उन्हे उपहार चाहिए।'

हा।

कहो जरूर मिलेगा। आप कहाँ तशरीफ रखती है ?

साथ ही है।

कहा ?'

बाहर मोटर म।

थोड़ा देर और इन्तजार करें। तकलीफ तो होगी। मैं शीघ्र ही उपहार लेकर पेश होता हूँ।

'जरूर ?'

निश्चय।

बिहारी चला गया। उसे विश्वास था कि विमल जरूर आयगा। उसके ख्याल से विमल उसका सब मतलब समझ गया था।

× × ×

क्या कीमत दे देंगे 'मन्त्रीजी'?

'सब के लिये ?'

हां सब के लिये ही समझिये।'

'कीमत तो अच्छी ही मिलनी चाहिये। करीब-करीब हर राष्ट्र में इस कल्पना का केन्द्र है। लाखों प्रतियां एक-एक की इसकी होकर बिकेंगी।'

आप उससे मेरे लिये पूछ सकते हैं ?'

जरूर।

मन्त्री इतना कहकर हमारे पूर्व परिचित विमल व्यापारी के पास गया और उससे कलाकार के विचार प्रकट किये। व्यापारी मन्त्री की तरफ देख कर एक बार मुस्कराया और फिर अपने थैले में से चेकों की चेक बुक निकाल कर अपने हस्ताक्षर किये और उसे खाली चेक को मन्त्री के हाथ में दे दिया। चेक थमाते वक्त व्यापारी ने कहा—

इसे भर लीजिये वही कीमत ठीक रहेगी।

मन्त्री महोदय व्यापारी की व्यवहार कुशलता देख कर चकित रह गया। उसने अपनी स्थिति सुरक्षित रखने के लिये और आगे बढ़ना उचित न समझा। बेचने वाले को खरीदने वाले के सामने ला उपस्थित किया। व्यापारी ने कलाकार व उसके सहायक को किंकर्तव्यविमूढ़ देख कर चेक को अपने हाथ में लिया और बाईं तरफ से उस पर शून्य अंक (०) धरने शुरू किये। वह बगैर हिचकिचाहट के चार अंक लिखे गया कि कलाकार ने

उसका हाथ आगे लिखने से रोक लिया। उसने कलाकार की ओर मुड़ते हुए कहा—

'और लिखिए।'

'बस कीजियेगा।' जवाब आया।

आपकी मर्जी।'

उसने चैक और कलम को कलाकार के हाथ में पकड़ाते हुए कहा—

आगे आप रख दीजिए मगर काटियेगा कुछ नहीं।

कलाकार एक बहुत बड़े असमंजस में पड़ गया। उसकी भावुकता व्यापारी की उदारता को देख कर उमड़ आई। उसके मुंह से शब्द न निकला। कलम पकड़ने के साथ ही उसके हाथों में कम्पन दृष्टिगोचर होने लगा। उसने अपने सहायक की ओर देखा मगर वह मुस्करा रहा था। कलाकार को कुछ भी लिखने का साहस न हुआ। वह एक प्रकार से लज्जित था। व्यापारी ने कलाकार के हाथ से चैक और कलम लेकर उसके सहायक के हाथ में दे दिये। सहायक ने सोच विचार के बाद चार शून्य अंकों के पहले एक का अंक लिख दिया और चैक कलाकार को व कलम व्यापारी को पकड़ा दिये।

व्यापारी और कलाकार के बीच दस हजार रुपये में सौदा तय हो गया। व्यापारी ने एक रसीद पर कलाकार के हस्ताक्षर ले लिये। कलाकार ने हस्ताक्षर करते हुए कहा—

'आप मुझे चैक की बजाय रुपये नहीं दे सकते ?'

'जरूर दे सकता हूं।'

व्यापारी ने अपने थैले में से हजार हजार के दस नोट निकाले और उन्हें कलाकार को दे दिये।

× ×

बिहारी के चले जाने के थोड़ी देर बाद विमल प्रदर्शिनी के बाहर निकला। उसके हाथ में सुरक्षित एक बड़ा लिफाफा था। बिहारी के मोटर

चालक से उसे मालूम हुआ कि मजु व बिहारी सामने के कुंज निवास में उसका इंतजार कर रहे हैं। विमल वहीं चला गया। उसने अन्दर जाने पर देखा कि मजु एकान्त कमरे में मेज के सहारे बैठा आराम कर रहा है। उस कमरे से कुछ दूर बिहारी लगा हुआ प्रबन्ध में कुछ बातचीत कर रहा था। विमल को अच्छा मौका मिल गया। वह सीधा कमरे में मजु के पास चला गया। पहुंचते ही उसने मजु के सामने मेज पर अपने हाथ का लिफाफा डाल दिया। उसके मुंह से शब्द निकले— आपका उपहार।

मजु ने लिफाफे को खोल कर देखा तो उसके चेहरे का रंग बदल गई। अन्दर की चीजों को उसने मेज पर रख दिया। थोड़ी देर की खामोशी के बाद मजु ने कहा—

यह सब तो मेरे ससुराल में बहुत हैं विमल बाबू !

पीहर में कौन से नहीं थे, श्रीमतीजी ?

'आप कलाकार हैं अपने योग्य उपहार देते।

विमल को मौका मिल गया। उसने आवेश में कहा—

'उसके योग्य तुम नहीं हो, मजु ! इसलिए अपनी पसन्द को तुम्हारी पसन्द में बदल कर लाया हूँ।

मजु कम्पायमान हो उठी। उसके भावों ने उसे विचलित कर दिया। असली परिस्थिति अब वह कह नहीं सकती थी। उसने आवेश में सिर्फ इतना ही कहा—

विमल बाबू ! हटाइये इसे। उसके हाथ ने एक ही बार ने विमल के लाये हुए उपहार को छिन्न-भिन्न कर दिया और वह नत मस्तक हो गई। थोड़ी देर में मजु के कानों में अपने पतिदेव की आवाज सुनाई दी।

उसने अपना सर ऊंचा किया और देखा कि उसके पतिदेव फर्श पर बिखरे हुए सोने के कुछ टुकड़े और हजार हजार के करेंसी नोटों को बटोर रहे हैं। विमल वहां नहीं था।

१९

जीवन की प्राकृतिक शक्तियों की अप्राकृतिक शक्तियों पर एक बार फिर विजय हुई। अधिकाराजी का आदर्श मान विमल की भावुकता का, उसकी भावनामय निधि को नष्ट न कर सका। परिस्थिति वश दबी हुई भावनाएं मौका पाकर फिर प्रवल बल्कि तीव्रतर हो उठी। यथोचित माग न पाकर अथवा माग को अवरुद्ध पाकर व दूसरे मार्ग से प्रवाहित हो गई। विमल का हृदय मजु से मिले अपमान की चोट को भूला नही था। उस जीवन को स्वाभाविक प्रेरणाओं से निवृति नही मिली थी। शायद किसी को नही मिलती है। वह अपना बदला लेने के लिए उतावला हो उठा। अपने हृदय में क्षणिक शान्ति भी मजु के हृदय में वैसी ही चोट पहुँचा कर ही वह हासिल कर सकता था। सिवाय इसके वह अपने हृदय के दर्द का और किसी तरह मजु को समझाने में समर्थ न था। उसे अपना दर्द मजु को समझाने की अब भी जरूरत थी। मजु में उसकी दिलचस्पी कम न हुई थी। उसे मजु से अलग होने का रंज था। परिस्थितिवश वह अपने दर्द का वास्तविक रूप में प्रकट न कर सका। उसके प्रेम के उद्गार अपना रूप बदल कर मजु के सामने आये। जीवन की स्वाभाविकता के पर का आदर्श जीवन का आवरण हो सकता है—प्राण नहीं। पारस्परिक सवेदनाए उनका आदान प्रदान ही जीवन है। जीवन की जरूरत आदर्श नहीं बल्कि भाव और भावनाएँ है—आदर्श कल्पना की वस्तु है जिसे प्राप्त नही किया जा सकता। हृदय में उठने वाले भाव जीवन की एक मात्र सत्यता है जिससे मनुष्य छुटकारा नही पा सकता। उन्हें दबाया जा सकता है मिटाया नही जा सकता।

मंजु ने विमल के मुँह से निकले हुए घृणास्पद शब्दों को मजबूरन से सुना। उसके भाव उमड़ आए। अपनी उदारता के अधिकारों से वह इस प्रकार लज्जित न होना चाहती थी। उसे रंज हुआ कि उसके त्याग की कोई कीमत नहीं है। जीवन की इस मंजिल पर तो वह विमल के उन्नति-पथ में बाधक नहीं हो सकती थी। अब विमल को अंधेरे में कैसे रखा जाय? अतीत का माप पूरा हो चुका था। त्याग अपना उद्देश्य प्राप्त कर चुका था। इसके बाद भी त्याग करने वाले को शान्ति से अलग रखा जाय यह कहाँ का न्याय था। उसकी शान्ति रहस्य को जाहिर करने में हो सकती थी। यदि विमल को अधिकारों का रहस्य का स्पष्टीकरण कर देते तो वह विमल का विश्वास आज भी प्राप्त कर सकती थी। इस से ज्यादा अपने त्याग की कीमत वह नहीं चाहती थी।

मगर ऐसा न हुआ और वास्तविकता की अनभिज्ञता के कारण मंजु को विमल के हाथों घृणा का शिकार होना पड़ा।

मंजु के दिल पर विमल के अविश्वास की जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई। वह जिसकी हृदय से शुभकामना करे उसी के हाथों उसका अपमान हो यही उसकी वेदना का कारण था। मंजु का भावुक हृदय अंधेरे में उस चोट को न सह सका। पुरानी कहानियां एक बार फिर याद हो आईं। दबे हुए भाव फिर से जागृत हो उठे। अतीत जाग उठा। आध्यात्मिक बंधन ढीला पड़ गया। सामाजिक सूत्र को वह तोड़ना न चाहती थी। अपनी बीती देख कर आदर्शवाद में उसका विश्वास न रहा। संस्कारों की कमजोरी से उसने दिल के भावों को किसी के आगे जाहिर न किया। सामाजिक संस्कारों की कमजोरी की वजह से वह अपने पतिदेव से भी अपने दुख का कारण न कह सकी। अपने दुख को उसने किसी के आगे जाहिर तक न किया। ससुराल के सब सुख उसके आन्तरिक भावों की होली में जल कर खाक हो गए। उसने महसूस किया कि विमल की याद को वह किसी तरह अपने हृदय से नहीं भुला सकती है। अब भी उसके हृदय में विमल के लिए बहुत जगह थी। पतिदेव सिर्फ शरीर के स्वामी थे। मंजु के हृदय का राज्य

अब तो विमले के लिए सुरक्षित था।

अपने हृदय के स्वामी को रूठा हुआ पाकर मंजु का हृदय मुरझा गया। अपने कामों में उसे दिलचस्पी न रही। ज्यों ज्यों दिन गुजरे उसका स्वास्थ्य खराब होने लगा। भोग छूटे, आराम छूटा, घूमना फिरना छूटा और एक दिन ऐसा भी आया जब खाना पीना छूटने की नौबत तक आ गुजरी। मंजु के शरीर ने खाट का आसरा ले लिया।

मंजु के परिवार वालों को उसके जीवन के लिए चिंता पैदा हो गई और कुछ दिन गुजरने के बाद खतरा। नामी नामी हकीम वैद्य वैद्यराज और डॉक्टर आए और अपना अपना अनुभव आजमाया मगर कोई फायदा न हुआ। जब तक जिन्दगी की आशा रही, मंजु अपनी कमजोरी से छुटकारा न पा सकी। उसे किसी के आगे अपना रहस्य प्रगट करने की हिम्मत न हुई। संस्कार इतने बलवान होते हैं इसका उसे ज्ञान न था। उनकी प्रबलता का रूप वह अनुभव कर रही थी।

मंजु की पिछली रात ऐसी गुजरी जब उसे नींद बिलकुल न आयी। उसने आज की रात यह महसूस किया कि उसकी जिन्दगी अब अधिक नहीं है। आज भी पतिदेव उसके पास थे।

आधी रात बीत चुकी थी। बिहारी मंजु की पलंग के पास आराम कुर्सी पर बैठा कुछ विचार मग्न हो रहा था। एकाएक उसे क्षीण आवाज में कुछ अस्पष्ट शब्द सुनाई दिये। वह उठकर बीमार के पास गया। मंजु उसके मुंह की ओर एकटक देखने लगी। जवाब में बिहारी ने अपना हाथ उसके सर पर फेरना शुरू किया और वह पलंग पर किनारे बैठ गया। मंजु की आँखें छलक आईं और कई बूंद आंसू बाहर बह गये। बिहारी ने महसूस किया कि उसका जीवन-साथी खतरे में है। उसने पूछा—

बहुत ज्यादा तकलीफ है ?

मंजु ने सर के इशारे से 'हाँ' में जवाब दिया।

डाक्टर को बुलाऊं ?

ग्गम्र अब क्या करेगा ? मजु ने बिहारी का हाथ अपनी त्थेली म अपनी ओर खाच लिया । बिहारी उस धीरे धीरे त्बाने ग्गा ।

निराश न करा मजु । उसके ग । म निराशा की भलक थी । उसका स्वर भर आया । मजु न दानता स एक टक बिहारी की आखा म देखा । वह बिहारा से कुछ कहना चाहती थी । बिहारी उसक मन के भावा को समझ गया । उसने पूछा—

मर लिय काई आना ?

आप मानियगा ?

जरूर मजु ? उपाय रहते तुम्हारी कोई इच्छा पूरी हुए बगर न रहगी ।

मुझ आपस एसा ही विश्वास है । मजु ने विश्वास का दृष्टि से अपन पति की आखा म देखा ।

बिहारी न कहा–मर लिय क्या आना है ?

पुरानी स्मृतिया फिर स ताजी हा आइ है देखती हू जीवन म एक बडी भारी भूल कर दी ।

भूल इसान स होती है, मजु ।

उसका अफसास भी इसान ही का होता है और जीवन की इस मजिल पर ता बहुत ज्यादा . साचती हू विमल का क्यों नाराज कर दिया ?

तुमन उसे नाराज किया मजु ?

हाँ ।

बिहारी न एक क्षण मजु की तरफ गौर स देखा और फिर कहा—

उसस मुलाकात कराग ?

यह आप साचिये ।

का इज न । है मजु । उसके लिये मैं अभी बुलावा भेजता हू । मुझ विश्वास है कि वह जरूर आयगा ।

याद रही है। आपसे मिलना चाहती है। मैं इसी के लिए आया हूँ। उसने यह भी कहा है कि मुझे विश्वास है आप जरूर आयेंगे।

जरूर बिहारी। सिर्फ मेरे लिए ही कहा ?

हाँ अधिकारीजी। सिर्फ आपके लिए ही।

मठ के अधिकारीजी ने चद्दर ली और वे बिहारी के साथ मोटर में बैठ कर चल दिये। जिस समय वे बिहारी के घर पहुँचे रात का अंतिम पहर बीत रहा था। मणिबाबू मंजु के कमरे में उसके पास बैठे मंजु के ताप मान के नक्शे को देख रहे थे। अधिकारीजी को देख कर वे खड़े हो गये और नमस्कार किया। अधिकारीजी सीधे मंजु के पलंग के सहारे चले गये और उसके ललाट पर अपना हाथ रखा। मंजु ने आँखें खोलीं। उसने अधिकारीजी को देख कर क्षीण शब्दों में कहा—

और कौन है ?'

मैं ही आया हूँ मंजु।

कमरे में ? अपने प्रश्न को साफ करते हुए मंजु ने कहा—

ये सब बाहर चले जायँ ?

अधिकारीजी का इशारा पाकर सब लोग बाहर चले गए। अधिकारीजी ने एक कुर्सी को मंजु के पलंग के सहारे खींच लिया और वे उस पर बैठ गये। उन्होंने सुना—

'विमल का पथ सुधर गया अधिकारीजी ?'

अधिकारीजी मंजु के पहले ही प्रश्न को सुन कर अवाक रह गए। उनसे उत्तर देते न बना और उनके चेहरे पर एकाएक मुर्दनी छा गई। उन्होंने मन्त्र मुग्ध की तरह मंजु के चेहरे की ओर देखना शुरू किया मगर मंजु की दृष्टि से वे अपनी दृष्टि न जोड़ सके। मंजु ने फिर कहा—

आपकी खामोशी मुझे निराश कर रही है अधिकारीजी। मंजु के शब्द अधिकारीजी के कानों में पड़े। उन्होंने जवाब की कोशिश में कहा—

उसका भविष्य उज्ज्वल है मंजु।

और आपके मठ का भविष्य ?

'वह उसके पीछे है।' अभी तक अधिकारीजी मञ्जु की बात की गहराई तक न पहुँच सके थे।

आपने आज्ञा दी और मैं विमल के रास्ते से दूर होगई, मगर, इससे मुझे सुख न हुआ, अधिकारीजी। आज मुझे अपने किये पर दुख है।

मञ्जु!

हाँ अधिकारीजी। आपका आदर्श ज्ञान विमल के मानवी भावों को बिल्कुल नहीं बदल सका। उसके हृदय में आज भी वही भाव उठते हैं। जो पहले उठते थे। मठ के अनुकूल वातावरण ने दो अवगुण उसमें और पैदा कर दिये — पहला अविश्वास और दूसरी प्रतिहिंसा।

नहीं मञ्जु।

'मरता हुआ इन्सान झूठ नहीं बोलता अधिकारीजी। आप विश्वास कीजिये।'

विमल से मिलना चाहती हो, मञ्जु ?'

'आप आज्ञा दे देंगे अधिकारीजी ?

'हाँ, मञ्जु।'

नहीं, अधिकारीजी। आपकी आज्ञा समाज और आदर्श दोनों के बन्धनों को ढीला कर देगी। इससे भी कोई फायदा नहीं।'

'अपनी इच्छा प्रकट करो मञ्जु। मैं उसे पूरा करूँगा।

जिसके लिये मैंने त्याग किया उसे तो सुख होना चाहिए अधिकारीजी ?

जरूर मञ्जु।

विमल का अविश्वास दूर होना चाहिये, अधिकारीजी। अब उस रहस्य को आप विमल से न छिपाइए। वरना, मेरे मरने के बाद भी वह सुखी न हो सकेगा। जिन्दगी रहते मुझे विश्वास आजाय कि उसका मेरे प्रति अविश्वास दूर हो गया तो मैं सुख से प्राण त्याग कर सकूँगी अधिकारीजी।

नहर म ज। म तुम्हारी इच्छा जरूर पूरी करूगा।' उसकी आखें सजल हो गई। मजु की अन्त तपीड़ा का उन्हे भान हो गया था। उसकी अनुभूति उनके हृदय ने की।

जिन्दगी व ज्यादा श्वास बाकी नहीं हैं अधिकारीजी। मेरी यह हरकत बुझने हुए दीपक की तरह है। मेरे लिय आपको जल्दी करनी चाहिए।

आराम करो मजु। ईश्वर सबकी मदद करता है। और इतना कह कर अधिकारीजी उठ खड़े हुए। उन्होंने दो एक कदम दरवाजे की तरफ बढ़ाए होंगे कि उन्हें क्षीण स्वर म अपना नाम सुनाई दिया। व वापिस पलग के पास आगए। मजु न अपने तकिये के नीचे म उन्हें एक बन्द लिफाफा देते हुए कहा—

यह भी ले जाइए। आपको मदद मिलेगी।

क्या है मजु ?

रुपये और माने के पत्र हैं जो माली न बार उपहार म मुझे दिए थे। दूसरी चिट्ठी है जिसे लिख कर मैंने उसे धोखा दिया।

अधिकारीजी लिफाफे को लेकर कमरे के बाहर निकल आये। अब तक अस्पताल का समय हो चुका था। बाहर उन्हें मणिबाबू मिले मगर — फिर आऊगा —कह कर व मोटर म बैठ गये। मोटर का चालक उन्हें मठ के रास्ते तेजी से ले गया।

२०

अधिकारीजी के चले जाने के बाद बिहारी फिर मंजु के पास गया। उसने देखा कि मंजु की हालत पहले से ज्यादा बिगड़ी हुई है। एक अव्यक्त भय की आशंका चिंता उसे चारों ओर से घेरे हुए था। अपनी अशान्त व्यग्रता में उसने नर्स को बुलाया और उसके आदेश से डॉक्टर को। मगर कोई भी उसे सन्तोषजनक जवाब न दे सके। ईश्वर सब ठीक करेगा, अभी वह खतरे के बाहर नहीं है,' दवाई दी है। आशा है कुछ असर करेगी। आदि उत्तरों में उस आशा की झलक तक दिखाई न दी। उसका भय प्रतिपल बढ़ता गया। उसने महसूस किया कि अब वह समय भी आ पहुँचा है जब मंजु अपनी जबान तक भी न खोल सकेगी। मणिबाबू से भी हालत छिपी हुई न थी। डॉक्टर साहब उन्हें कह गये थे कि आज उन्हें मंजु को हरदम देखते सभालते रहना चाहिए। सारे परिवार के लिए यह एक ऐसी परिस्थिति थी जिसके अनागत के लिए सभी चिन्तित व आशंकित थे।

डाक्टरों के बाद ज्योतिषियों की बारी आई। उन्होंने भी आज का दिन मंजु के लिए खतरनाक बताया। उनकी गणना में मारकेश' पड़ता था। ग्रहों की शान्ति के लिए उन्होंने कई तरह के दान पुण्य बताए और जप आदि के लिए सलाह दी। जिसने जैसा भी कहा एक अबोध व निःसहाय की तरह सब परिवार वाले करते व कराते गए। दवाई, जप दान पुण्य सबकी प्रतिक्रियाएं वे बार-बार मंजु के चेहरे पर देखने लगे। निरीह निराशा निपट विवशता में सिवाय प्रार्थना एक साथ प्रार्थना के और कोई चारा उनके पास नहीं बचा बिहारी की आशा मंजु की सासों के साथ उसके चेहरे की छायाओं के साथ यथारूप आन्दोलित हो रही थी।

हाँ गुरुदेव।'

कोई खास मतलब था ?'

वह इसी के योग्य थी गुरुदेव।'

क्या मतलब ?

प्रदर्शिनी म ाज गए मेरे चित्रा का उमने देखा। जिस चित्र के लिए मुझे सर्वप्रथम पुरस्कार मिला वह उमी का था। अपने पति की मारफत उस चित्र को उसने माँग की। परन्तु मैंने उस उसके याग्य न समझा। उमे दौलत चाहिए थी। वह सिर्फ उसी की इज्जत कर सकती है। दौलतमन्द न होने के कारण उसने मेरा तिरस्कार किया गुरुदेव। उसकी माँग को दौलत स पूरा करना ही मैंने ज्यादा अच्छा समझा। चित्रा को न देकर उनसे प्राप्त कीमत मैंने उस भेंट कर दी।

'तुम्हे उसके लिए दुख न ा है विमल ?

नही गुरुदेव। मैंने यह जान बूझ के किया था। वह इसी के याग्य थी।

क्या ?'

यह न पूछिये गुरुदेव। गृहस्थ की बहू बेटी पर म इल्जाम लगाना नही चाहता।

तुम्हे गलतफहमी हुई है, विमल।

न । गुरुदेव ' मैंने अपनी आँखो से सब सबूत देखा है।

'सिर्फ एक पत्र न ?

'उसके हृदय को समझने क लिए वह पत्र काफी था गुरुदेव।'

यही वह पत्र है ? अधिकारीजी ने एक पत्र को विमल के हाथ मे दे दिया।

हा गुरुदेव ' यही वह पत्र है।'

'मेरे आदेश से मजु ने तुम्हारा तिरस्कार किया था विमल। यह पत्र मेरे ही आदेश की क्रिया और पालन है। मठ के भावी शासक की उन्नति म मैं मजु को बाधक समझता था। तुमने मेरी माग को ठुकरा

दिया, मगर मंजु ने नहीं। तुम्हें अधिकार युक्त और सुखी बनाने के लिए उसने अपनी इच्छाओं का अपने सुख का त्याग किया है जिसके लिये तुम्हें उसका जीवन भर आभारी रहना चाहिए।

गुरुदेव ?

वह अब भी तुम्हें पूजती है। विमल। उसके अपने प्रेम का अमृत आज भी तुम्हारे और उसके पास सुरक्षित है। तुम्हारे प्रति उसमें वासना रहित प्रेम का भाग रहा था। जीवन की बाकी घटनाएं उसके साथ मजबूरी से गुजरी हैं। अधिकारीजी के शब्दों का इतना उसके विश्वास के लिए पर्याप्त थी। वह बोला--

मुझे धोखा हुआ गुरुदेव। साथ ही एक घायल व्यक्ति की तरह उसके चेहरा सफेद व शरीर पाषाण बन गए। उसने सुना--

'पश्चाताप के लिये तुम्हारे पास बहुत समय है विमल मगर मंजु की जिन्दगी अब ज्यादा दूर की नहीं है। एकमात्र तुम से मिलने की प्रतीक्षा में वह जीवित है। जिन्दगी रहते अगर तुम उसकी इज्जत कर सको तो उसका त्याग सफल हो जायगा। अगर बहुत जल्दी तुम वहां न पहुंच सके तो जीवन भर तुम्हें पछतावा रह जायगा। सुन कर उसके हृदय में सागर से भी अधिक भयंकर व तीव्र हलचल मच गई।

शीघ्र ही विमल अधिकारीजी को प्रणाम करके कमरे से बाहर निकल गया। वह मठ के फाटक के बाहर पहुंचा ही था कि बिहारी की मोटर वहां आकर रुकी। मोटर-चालक ने विमल को पहचान कर बिहारी का सन्देश कह सुनाया। उसने कहलाया था--

'किसी तरह एक बार आ जाओ। मंजु सख्त बीमार है। वह तुमसे कुछ कहना चाहती है।

विमल मोटर में बैठ गया और मोटर तेज रफ्तार से दौड़ने लगी।

जिस समय विमल बिहारी के घर पहुँचा उस आनन्द के चिह्न कहीं भी दिखाई न दिये। फाटक के बाहर भिखारियों की भीड़ जमा थी और

मणिबाबू उन्हें वस्त्र—भोजन आदि दे रहे थे। उनका चेहरा दयनीय छाया में आच्छन्न था। आखिर एक पुरुष की सामर्थ्य पर भी बाहर न रही थी। घर के अन्दर प्रवेश करने पर उसे जप करते हुए पण्डित दिखाई दिये। वह मुख्य कमरे की ओर बढ़ा। वहाँ डाक्टरों का जमघट था। उनके चेहरों पर भी विवशता छाई हुई थी। उनके पास पहुँचते पहुँचते उसकी गति में शिथिलता आयी। निराशा की कालिमा ने उसे भी ग्रसित सा कर दिया। एकाएक कमरे में प्रवेश करते उससे न बना। द्वार पर ही उसके पाँव चिपक गए। उसने डाक्टरों की ओर देखा। भीषण गम्भीरता उसे उन पर छाई मिली। उसके कानों में हरिनाम की ध्वनि होती हुई क्षीण भनक पड़ी। सिर घुमा कर देखा तो हरिनाम सुनाने वाले कमरे से बाहर हो रहे थे। हृदय थाम कर वह अन्दर प्रविष्ट हो गया। अभी पूरे तीन कदम भी न बढ़ पाया था कि उसकी आँखें मंजु के मुरझाए हुए मुख पर जा लगीं। वह स्थिर रह गया। मूर्ति बन गया। एक एक करके कई क्षण गुजर गए। मगर वह खड़ा रहा—वहीं दूर। हिला तक नहीं। साँस तक भी शायद न ली। उधर मंजु द्वार की ओर मुँह किए लेटी पड़ी थी। आँखें खुली थीं। स्थिर स्थिति वह देखता रहा। उसने देखा कि तकिये का अचल भीगा है अश्रु-स्रोत सूख चुका था। उसकी धारा भी सूख चुकी थी। सिर्फ एक बूँद गिर कर नष्ट हो जाने के लिये शेष थी। विमल के देखते देखते वह भी गिरी और तकिये के आगे अंचल में अदृश्य हो गई।

विमल लौट गया। और आगे बढ़ने की आवश्यकता न थी—व्यर्थ था। करुण कोलाहल के बीच वह कोठी से निकल कर चला गया। न जाने कहाँ?

●●●